अक्तूबर २००० Rs. 10/-

चन्दामामा

चिलिका झील बच्चों के लिए आशामय, संगीत मय एवं उड़ता हुआ उपवन है। यह स्थिर और स्वप्निल चिलिका झील ओड़िसा के पूर्वी किनारे पर बनी है। जब तुम चिलिका में रहोगे तो तुम प्रकृति के पाठ पढ़ रहे होंगे। "यह एक डाल्फिन है" और "यह एक सारस" है। बच्चों के लिए एक जीव चित्र पुस्तक। अभिभावक-एक बात का याद रखें : इस विशेष पृष्ठ पर एकत्र सौन्दर्य की ओर अपने बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। चिलिका अन्य स्थानों से उड़कर आए पक्षियों के लिए शीतकालीन स्थान है। रंग एवं अनेक आकार बच्चों के कोमल मस्तिष्क की कल्पना को बढ़ा सकते हैं। इस छोटे से परियों के देश जैसे आश्चर्यपूर्ण द्वीप पर कोई भी नाव द्वारा जा सकता है।
पानी वाले खेल बच्चों तथा किशोर हृदय को और भी आकर्षित करते हैं। इस स्वच्छ गहरी नीली झील के बीचो-बीच प्रसि

चन्दामामा

सम्पुट - 102 अक्तूबर 2000 सञ्चिका-10

अन्तरङ्गम्

कहानियाँ

ज्ञानप्रद धारावाहिक

पौराणिक धारावाहिक

ऐतिहासिक विभूतियाँ

विशेष

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K Press Pvt. Ltd., Chennai-600 026 on behalf of Chandamama India Limited, Chandamama Buildings, Vadapalani, Chennai-600 026. Editor: Viswam

इस माह का विशेष

पुण्य दान
(बेताल कथा)

मृत्युञ्जय

कपटी वैद्य

भारत की गाथा

संपादक
विश्वम

प्रधान कार्यालय :
चंदामामा प्रकाशन विभाग
चंदामामा बिल्डिंग्स
वडापलानि, चेन्नई - 600 026
फोन/फैक्स : 4841778
4842087
इ.मेल : Chandamama@ vsnl.com

मुंबई कार्यालय
2/B, नाज बिल्डिंग्स,
लेमिंगटन रोड, मुंबई - 400 004.
फोन : 022-388 7480
फैक्स : 022-388 9670

For USA
Single copy $2
Annual subscription $20
Mail remittances to
INDIA ABROAD
43 West 24th Street
New York, NY 10010
Tel: (212) 929-1727
Fax (212) 627-9503

भूल सुधार : ओलम्पिक कामिक्स में पृष्ठ संख्या ३८ पर पहले चित्र तथा दूसरे चित्र के साथ दी गई जानकारी गलत छप गयी है। इसे सुधार कर इस प्रकार पढ़िए : पहले चित्र के साथ "एक दूसरे अफ्रीकन, युगान्डा के धावक, जॉन अकी ने ४०० मी. बाधा दौड़ जीत कर एक कीर्तिमान बनाया ।" और दूसरे चित्र में : रोमानिया की नाडिया केमन्सी ने १९७६ के मानट्रियल ओलम्पिक में कीर्तिमान बनाते हुए जिमनास्टिक में दस में से दस अंक प्राप्त कर बहुत सारे स्वर्ण पदक प्राप्त किए ।"
ओलम्पिक प्रश्नोत्तरी के ४०वें पृष्ठ पर नौवें प्रश्न में ऊँची कूद के स्थान पर "लम्बी कूद", ऊँची छलाँग के स्थान पर "लम्बी छलाँग" पढ़िए । *इस भूल के लिए हमें खेद है ।*

संस्थापक

चक्रपाणि, बी. नागि रेड्डी

भारत के भाग्य पर विश्वास रखें

काश्मीर से लेकर कोयेम्बटुर तक फैले आतंकवाद ने अभी तक न जाने कितने मासूमों के प्राण लिए हैं । जिसका क्रम अभी भी चलता चला-जा रहा है । मृत्यु के इस ताण्डव से बचने तथा आतंकवाद से लड़ने के लिए देश को एक बड़ी धनराशि और जनशक्ति की आवश्यकता है । उचित यही होगा कि सरकार, सम्बन्धित अधिकारियों का ध्यान इस घृणित आतंकवाद के विरुद्ध कोई सुव्यवस्थित रणनीति तैयार करने की ओर बंटाए । परन्तु चिन्ता का विषय यह है कि इतना सब कुछ करने के पश्चात भी सम्पूर्ण सुरक्षा की सम्भावना कम ही है । क्योंकि यहाँ, विश्वासघात के नाटक का प्रदर्शन बड़ी आसानी से किया जाता है । इसलिए जिस प्रकार एक खुली चुनौती का सामना करने के लिए साहस की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार किसी की नीति पर विजय पाने के लिए मेधावी होना आवश्यक है । परन्तु यहाँ तो कायर लोग मात्र किसी जनस्थान, जनबैठक और बाजारों आदि में बम गिराकर, बिस्फोट कर अपना साहस दिखाते हैं। क्योंकि वे चुनौती का सामना नहीं कर सकते ।

अब यह पूर्ण रूप से ज्ञातव्य है कि भारत में आतंकवाद को बढ़ावा देने और उसे आर्थिक सहायता प्रदान करने में विदेशियों का ही हाथ है । वे लोग भारत को सुख और शांति से रहते नहीं देखना चाहते । भारत अभी तक ऐसी न जाने कितनी समस्याओं से निपटता चला आया है । हमें विश्वास है कि वह शीघ्र ही इस समस्या से भी सफलतापूर्वक निपट लेगा । परन्तु हम लोगों के लिए जो अनिवार्य है, वह यह कि हम भारत के भाग्य पर विश्वास रखें । यह भारत ही था जहाँ सर्वप्रथम सभ्यता की खोज आरम्भ हुई । संसार भारत द्वारा अनुसंधानित सत्यों से धनी हो गया। यह पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि भारत ही सर्वप्रथम विश्व शांति का ध्वज फहरायेगा और संसार पुनः और अधिक धनी बन बैठेगा ।

इस प्रकार हमें अपने दृढ संकल्प द्वारा अपने मित्रों को उत्साहित करना चाहिए कि वे भारत के उज्वल भविष्य की कामना करें । क्योंकि भारत इन धमकियों से आतंकवाद के सामने कभी भी अपने घुटने नहीं टेकेगा । हमारा यही साहस और विश्वास ही इन शत्रुओं के लिए मुंहतोड जवाब होगा ।
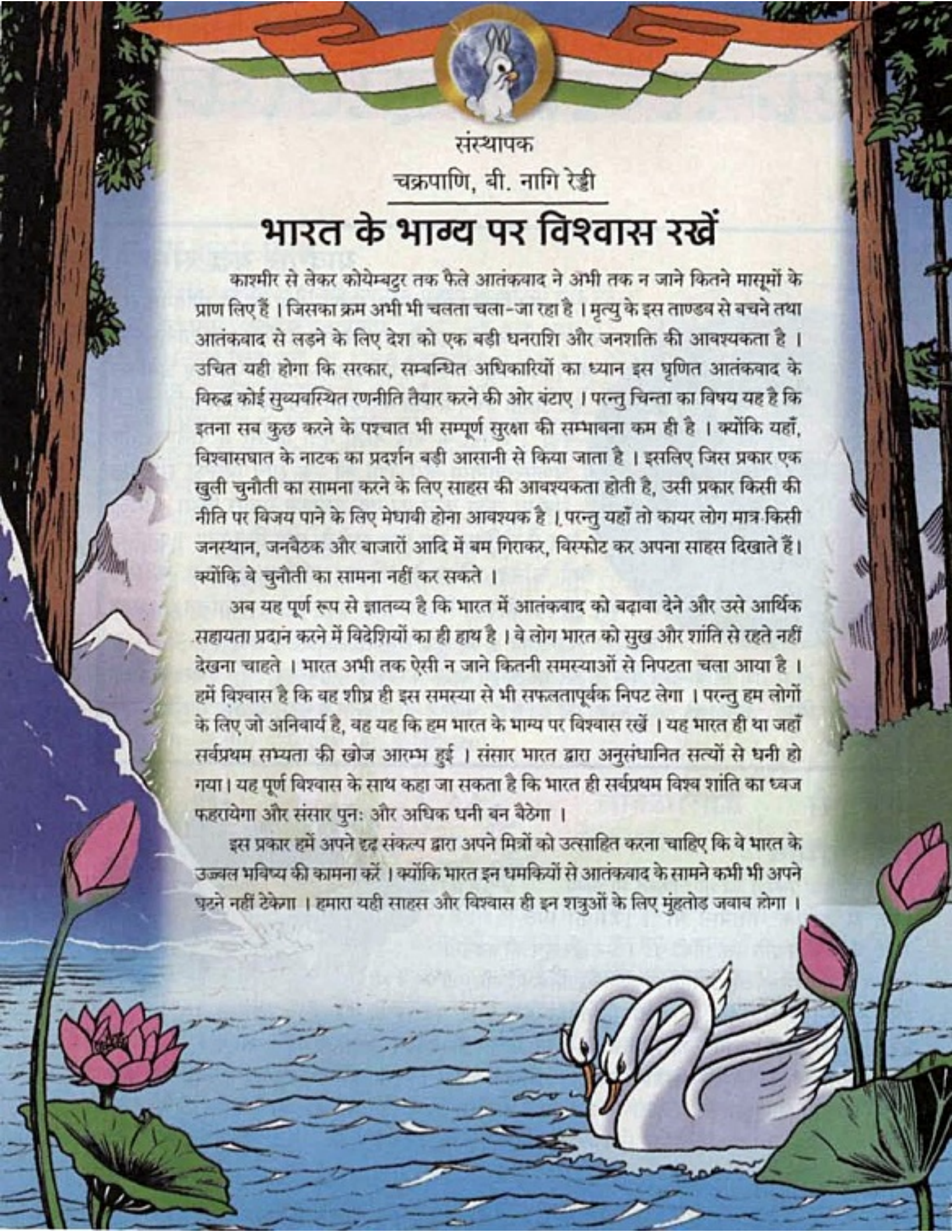
समाचार झलक

यादगार युद्ध समाप्ति

१९३९ में जब द्वितीय विश्व युद्ध आरम्भ हुआ था तो सोवियत संघ मुख्य रूप से जर्मनी, इटली और जापान के लिए एक शक्ति-स्तंभ था । मित्र राष्ट्रों के रूप में ब्रिटेन, फ्रांस और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका को अपनी प्रथम स्थिति में लगभग सभी मोर्चों पर हानि उठानी पड़ी । जर्मनी के बाद नाजी नेता हिटलर ने पोलैण्ड और चेकोस्लवागिया जैसे देशों को एक साथ मिलकर सोवियत संघ पर राज्य करने का एक असफल प्रयास किया । परन्तु बाद में सोवियत संघ मित्र देशों के साथ मिल गया । इन मित्र देशों के नेता, ब्रिटेन के (बिन्सट चर्चिल) यू.एस.ए. के (हैरी एस.ट्रूमैन) और सोवियत संघ के (जोसेफ स्टालिन) ने एक ऐतिहासिक बैठक की । जो युद्ध समाप्ति का कारण बनी ।

हाल ही में रशियन केन्द्रीय बैंक ने उस महत्वपूर्ण बैठक का चित्र बनाने हेतु १०० रूबल के सिक्के आवंटित किए । अभी तक ५०० सिक्कों की ढलाई हो चुकी है जो वास्तव में बहुमूल्य और अतुलनात्मक हैं ।

कारण से पहले प्रभाव

अभी तक प्रकाश की गति किसी भी अन्य वस्तु से अधिक गतिमान थी । जिसकी गति १८६,००० मील प्रति पल आँकी गई । अब इस सूत्र को बदलना होगा । क्योंकि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के एक वैज्ञानिक डॉ.बाँग, जो एन.ई.सी. शोध संस्थान में कार्यरत हैं, ने यह प्रमाणित कर दिया है कि प्रकाश की गति ३०० गुना बढाई जा सकती है जिसमें प्रकाश धरती पर अपने आधार को छोड़ने से पूर्व ही पहुँच जाएगा ।

अब भौतिकी के सामान्य सिद्धान्त को दुबारा लिखना पड़ेगा । जिसे बदल कर यह कहना पड़ेगा कि ''प्रभाव के पूर्व कोई भी कारण स्पष्ट नहीं होता ।'' इस प्रकार अईनस्टाईन की 'रिलेटीविटी' का सिद्धान्त भी संदेह के घेरे में है ।

खोया हुआ चिह्न

रशियन राष्ट्रपति को लिखे गए एक पत्र में दो त्रुटियाँ पाई गईं । एक तो उसमें "एस्टीम वलाडीमीर पुटिन" के बाद आश्चर्य भाव का कोई चिन्ह नहीं था । दूसरे जिस पंक्ति में नेता को विद्यालय से बिदा लेनेवालों के नृत्य में बुलाया गया था उसमें लिखा गया था कि "आपका समय अच्छा बीतेगा हम आपको बिस्कुट खिलाएगें" - में यू. छोटे अक्षर में लिखा गया था। राष्ट्रपति के कर्मचारियों को इससे बहुत गुस्सा आया । उन्होने राष्ट्रपति को सलाह दी के वे नृत्य में भाग न लें । उन्होने पत्र लिखने वाले का भी पता लगा लिया। यह १७ वर्षीय ऐना प्रोवरोवा थी । लेकिन उसने यह नहीं लिखा था कि वह यह पत्र स्कूल छोड़ने वालों के तरफ से लिख रही है । अधिकारियों ने इस बात को बहुत गंभीरता से लिया और ऐना को रजक पदक न देने तथा अंतिम परीक्षा मे प्राप्तांक को कम करने पर दबाव डाला ।

उसके विद्यालय ने अब राज्य के सम्बन्धित उच्च अधिकारी के पास अपील की है कि ऐना को उसका पदक और उसके अंक पुन: दे दिये जायें ।

लोकप्रसिद्धि

ब्रैडमेन वास्तव में ब्रैडमैन थे । नहीं! वह पुराने क्रिकेट खिलाड़ी सर डोनाल्ड ब्रैडमैन की बात हम नहीं कर रहे है, बल्कि उनके-बेटे की बात कर रहे हैं। लगभग ३० वर्षों तक जॉन ने अपने नाम के साथ जुड़े ब्रैड्मन को जनता से छुपा कर रखा । हाल ही में उन्होने पत्रकारों को इसका कारण बताते हुए कहा कि उसने यह नाम इसलिए नहीं ग्रहण किया क्योंकि, जनता द्वारा उनके पिता को दिया गया "शीशे की दीवार" जैसे नाम से डरता था । आस्ट्रेलिया के नायक खिलाड़ी सर डोनाल्ड एक सम्मानित व्यक्ति थे । उनको आस्ट्रेलिया के (हाल ऑफ फेम) के "शताब्दी का पुरुष खिलाड़ी" नाम से जाना गया । इस अवसर पर पुत्र ने पिता का प्रतिनिधित्व किया और १९७२ के बाद पहली बार खड़े होकर अपने को जॉन ब्रैडमैन के नाम से परिचित कराया । इतने दिनों तक वह पूर्ण रूप से लोक प्रसिद्धि से दूर था ।

कहानी को सही अन्त दीजिए और पुरस्कार जीतिए

सृजनात्मक प्रतिस्पर्द्धा

नीचे एक कहानी का आरम्भ दिया गया है । इसमें एक रोचक कथा के सभी उपादान मौजूद हैं । किन्तु यह 'सृजन' तुम्हारे हाथों में है । तुम्हें सभी सम्भव कथाक्रमों की कल्पना करनी है और कहानी को अन्तिम रूप देना है । साथ ही एक आकर्षक शीर्षक भी । यह तुम्हें दो सौ से तीन सौ शब्दों के बीच करना है - न कम, न अधिक । सर्वोत्तम प्रविष्टि को आकर्षक पुरस्कार दिया जायेगा तथा इस पत्रिका में प्रकाशित भी किया जायेगा । यह प्रतिस्पर्द्धा हमारे बाल पाठकों के लिए है । अपना नाम, उम्र, कक्षा, विद्यालय का नाम. तथा घर का पता (पिन कोड के साथ) लिखना न भूलना ।

बहुत दिनों पहले महाबली सिंह नामक एक धनी जमींदार रहता था । उसका पुत्र बिजय सिंह बहुत खूबसूरत युवक होने के साथ सज्जन भी था । महाबली चाहते थे कि उनके पुत्र के लिए वैसी ही योग्य कन्या मिले ।

चूँकि महाबली एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे इसलिए उनके बहुत अच्छे मित्र भी थे । उन्हीं में से एक थे श्यामनारायण । जिनकी कपड़े की एक दुकान थी । वह न तो पढ़े-लिखे और न ही धनवान थे । परंतु फिर भी महाबली उनके सत्यपूर्ण विचारों का बहुत सम्मान करते । महाबली सिंह को जब कभी भी कोई समस्या आ जाती तो वह तुरंत श्यामनारायण की सलाह लेते और कैसी भी समस्या क्यों न हो, श्यामनारायण उनका हल अवश्य ढूँढ लेते ।

श्यामनारायण की दुकान में जब कभी नई साड़ियाँ आतीं तो वे उन्हें लेकर लोगों के घर-घर जाते । जिससे शीघ्र ही उनकी अच्छी बिक्री हो जाती । इस प्रकार वे आस-पास के गाँवों की महिलाओं और युवती कन्याओं में काफी प्रसिद्ध थे ।

एक दिन महाबली सिंह ने श्याम नारायण से कहा, "मित्र! मैं जानता हूँ कि तुम अपने व्यापार के कारण बहुत सारी युवती कन्याओं को जानते हो । उन्हें रोज देखते हो । तुम क्यों नहीं उन्हीं में से मेरे लिए एक पुत्र-वधू ढूँढ लाते।

"तुमसे क्या छिपाना । मैं भी यही सोच रहा था ।" श्यामनारायण ने उत्तर दिया । फिर उन्होंने महाबली से कहा, "विंध्य नगर के निवासी गंगादेव की पुत्री कामिनी और प्रेमापुर के निवासी महादेव सिंह की पुत्री दिव्यानी बहुत ही अच्छी लड़कियाँ हैं। वे सुन्दर होने के साथ-साथ चतुर भी हैं ।"

"मैं भी सौन्दर्य और चतुर आचरण का प्रशंसक हूँ । परन्तु मैं सचाई और होशियारी को अधिक महत्व देता हूँ । अब यह बताईए कि इन दोनों लड़कियों में कौन सबसे अधिक इमानदार और अपने कर्तव्य के प्रति सजग है?" महाबली ने पूछा ।

"मित्र ! मुझे एक सप्ताह का समय दो, मैं पता लगाकर बताता हूँ।" श्यामनारायण ने कहा ।

अच्छा ! तो अब यह देखना है कि आप लोग किस प्रकार महाबली के प्रश्नों का उत्तर ढूँढते हैं और श्यामनारायण को कहाँ भेजते हो? क्या वह उत्तर पाने में सफल हुए? क्या महाबली उनके उत्तर से सन्तुष्ट हुए? कहानी का शीर्षक देना न भूलो! अपनी प्रविष्टि के ऊपर रचनात्मक प्रतिस्पर्धा लिखो । अंतिम तिथि २५ अक्तूबर, २००० है ।

भारत की खोज प्रश्नोत्तरी का उत्तर :

१. अ. शंकराचार्य, आ. सम्राट अशोक,
इ. मीराबाई, ई. अथर्व वेद, उ. पतांजलि

२. राजकुमारी, कृष्णकुमारी उदयपुर मेवार की थी और वे दो विरोधी राज्य मारवार और जोधपुर थे।

बेताल कहानी

पुण्य दान

धुन का पक्का विक्रमार्क पेड़ के पास गया और पेड़ से शव को उतारकर अपने कंधे पर डाल लिया । फिर यथावत् वह स्मशान की ओर अग्रसर होने लगा । तब शव के अंदर के बेताल ने उससे कहा ''राजन् ! तुमसे किया जानेवाला परिश्रम एवं दिखाया जानेवाला आग्रह असमान है। यह किसी और से हो ही नहीं सका । मैं तो यह नहीं जानता कि यह सारा काम अपने पापों को धोने के लिए कर रहे है. या पुण्य कमाने के लिए? हो सकता है, पुण्य की यह कमाई किसी दूसरे का भला करने के उद्देश्यर से की जा रही हो । परंतु एक बात तो मैं अवश्य जानता हूँ कि एकाग्रता व पुण्य किसी कार्य को सफल बनाने में साधन नहीं बन सकते! इनसे किसी लक्ष्य को साधा

नहीं जा सकता । तुम्हारी जानकारी के लिए और तुम्हारी दिग्भ्रमित धारणा को दूर करने के लिए मैं तुम्हें धनगुप्त की कहानी सुनाऊँगा । उसके सुपुत्र गुणगुप्त ने अनगिनत पुण्य कार्य किये, किन्तु अपने लक्ष्य की प्राप्ति में वह असफल रहा । जब कि उसका पापी पिता अनायास ही पुण्य कमाकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल रहा । यह कैसे संभव हो गया? मुझसे सुनो'' फिर बेताल राजा को धनगुप्त की कहानी यों सुनाने लगा :

''अवंती राज्य के एक नगर में धनगुप्त नामक एक धनवान व्यक्ति रहा करता था । उसकी अपार संपत्ति थी । पर था वह बड़ा ही कंजूस! कंजूस इतना कि जूठन के अन्न-कण भी वह कौओं को फेंकता नहीं था । कितने ही लोगों को उसने धोखा दिया, उनकी जायदाद हड़प ली, गरीबों को अनेकों तरह से सताया, अपने-पराये का भी ख्याल किये बिना उसने बहुतों को बरबाद किया । यों पापों की उसकी गठरी बोझिल होती गयी । पचास साल की उम्र में वह रोग-ग्रस्त हो गया । चल-फिर भी नहीं सकता था । हमेशा खाट पर ही लेटा रहता था ।

उसका बेटा गुणगुप्त अपने नाम के अनुरूप ही गुणी था; स्वभाव से बड़ा ही अच्छा था ; मृदुभाषी था । बड़ों का आदर करना वह अपना परम धर्म समझता था । इसलिए कभी भी, किसी भी हालत में उसने अपने पिता की किसी भी बात का विरोध नहीं किया । धनगुप्त मना करता रहा, पर उसने एक महा वैद्य को बुलवाकर अपने पिता की चिकित्सा करवायी ।

धनगुप्त शीघ्र ही स्वस्थ होता गया, परंतु उसका गला बंध गया । उसके मुँह से बात निकल नहीं पाती थी । इशारों से ही वह काम चलाने लगा । उसका दायाँ हाथ भी बेकार हो गया । एक ही हाथ से उसे सारे काम करने पड़ते थे । वैद्यों ने उसे ठीक करने का बहुत प्रयास किया। पर कोई लाभ नहीं हुआ । अंत में उन्होने कह भी दिया कि उन्हें फिर से साधारण मनुष्य बनाना उनके बस की बात नहीं है ।

पिता के शाश्वत रूप से रोगी हो जाने के कारण गुणगुप्त ने जायदाद की देखभाल की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली । परंतु, वह लगातार इसी कोशिश में लगा रहा कि उसके पिता फिर से स्वस्थ हो जाएँ और जायदाद की जिम्मेदारी उन्हें सौंप दूँ । वह अब इसके लिए साधु-संतों की शरण में गया । धनगुप्त की दयनीय स्थिति को देखकर गुणगुप्त की पत्नी और उसके दोनों बेटे भी बहुत चिंतित थे ।

एक बार महानंद नामक एक साधु गुणगुप्त के घर आए। उसका आतिथ्य-सत्कार स्वीकार किया और उसकी प्रार्थना पर उन्होंने धनगुप्त के स्वास्थ्य का परीक्षण भी किया। थोड़ी देर तक आँखें बंद

करके वह सोच में पड़ गए । फिर उन्होंने गुणगुप्त से वेदना -भरे स्वर में कहा "तुम्हारे पिता ने धन की कमाई के लिए अनगिनत पाप किये। इन्होने ये सारे पाप अपने दायें हाथ से लिखकर और मुँह से निकली कड़ुवी बातों से किये । इसी कारण इनके शरीर के ये दोनों अंग निकम्मे हो गये । जब तक ये अपनी संपत्ति का त्याग नहीं कर देते, तब तक इनका साधारण मनुष्य बनना असंभव है" ।

धनगुप्त ने भी महानंद की ये मर्मभरी बातें सुन लीं। उसने हृदयपूर्वक सिर हिलाकर इसके लिए अपनी स्वीकृति दे दी । वसीयतनामा लिखवाया गया कि समस्त संपत्ति का वारिस अब से उसका पुत्र गुणगुप्त होगा । आश्चर्य की बात है कि अब वह बोलने लग गया और उसने दायें हाथ से वसीयत नामे पर हस्ताक्षर भी किया ।

घर भर में आनंद छा गया । वे इस अवसर पर एक बड़ा उत्सव मनाने की तैयारियों में लग गये । तब अचानक गुणगुप्त का बड़ा बेटा मणिगुप्त ज़ोर से चिल्लाता हुआ ज़मीन पर गिर पड़ा। महानंद ने उसकी परीक्षा की तो ज्ञात हुआ कि न ही वह बोल पाता है और न ही उसका बायाँ हाथ काम कर रहा है ।

गुणगुप्त अपने पुत्र की इस दुर्स्थिति को देखते हुए अवाक् रह गया। उसने महानंद से इसका कारण पूछा तो उसने कहा "तुम्हारे पिता के पाप अब तुम्हारे बेटे को सता रहे हैं । तुम्हें जो संपत्ति मिली है, वह पाप पूरित है। अब इसका उद्धार पुण्य कार्यों से ही हो पायेगा। इसके लिए तुम्हारे पिता अपनी स्वीकृति नहीं देंगे लेकिन यह संपत्ति अब तुम्हारी है । अगर पुण्य कार्य करने से तुम्हें तुम्हारे पिता रोकेंगे तो फिर से वे रोगग्रस्त हो जायेंगे । अच्छा इसी में है कि तुम अपने पिता की बातों की परवाह किये बिना अपनी संपत्ति का सद्विनियोग करो, उसे

पुण्य-कार्यों में खर्च करो । जिस दिन तुमसे किये जानेवाले पुण्य कार्य तुम्हारे पिता के पापों को धो डालेंगे, उसी दिन तुम्हारे पुत्र का स्वास्थ्य सुधरेगा, वह फिर से साधारण मानव बनेगा। यही देव संकल्प है" यों कहकर वह चला गया।

धनगुप्त अपने पोते की इस हालत पर बहुत दुखी हुआ । उसने दर्द-भरे स्वर में कहा "मैं अपने पोते की यह बुरी हालत नहीं देख सकता । मेरे लिए यह कितनी बडी शर्म की बात है कि मेरे पापों का शिकार इसे होना पड़ा । मेरी जायदाद मुझे लौटा दो और तुम लोग सुखी रहो" ।

गुणगुप्त ने पिता के इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। धनगुप्त से अपने पोते की यह दर्दनाक हालत देखी न जा सकी । वह अपने पाप धोने तीर्थस्थान जाने निकल पड़ा ।

उस दिन से कोई ऐसा पुण्य कार्य नहीं ; जिसे

गुणगुप्त ने न किया हो । गाँव के मंदिर की मरम्मत करवाई। भक्तों के लिए आवश्यक व समुचित सुविधाओं का प्रबंध किया। एक अच्छी पाठशाला की स्थापना की और निःशुल्क पढ़ाई का भी प्रबंध किया । अभावग्रस्त लोगों की भरसक सहायता दी। दान किये।

यों एक साल गुज़र गया । कितना भी खर्च वह क्यों न करे, उसकी आमदनी भी दिन ब दिन उतनी अधिक ही बढ़ती जा रही थी । पर पुत्र मणिगुप्त के स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हुआ ।

गुणगुप्त के दान-धर्मों की बात देश भर में गूँजती रही । सभी उसे महा पुण्यात्मा कहने लगे और उसकी वाहवाही करने लगे, उसकी प्रशंसा के पुल बांधे जाने लगे ।

किन्तु गुणगुप्त को ये प्रशंसाएँ संतृप्त नहीं कर पायीं । दुख के भार से वह दबा जा रहा था । वह हर दिन अपने बेटे के पास जाता और उसकी दुरस्थिति को देखकर आँसू बहाता था । उसे इस बात पर अपार दुख होता था कि जो भी पुण्य कार्य करता आ रहा हूँ, वे तो फलहीन हो रहे हैं ।

एक दिन उसके सभी निकट सम्बन्धियों ने मिलकर उससे कहा ''तुम्हारे पुण्यों ने तुम्हारी क्या भलाई की? अब साफ़ हो गया है कि अपनी कमाई को ऐसे गैरों में बांटना पुण्य नहीं कहलाता । अब ही सही, इन पुण्य कार्यों से दूर रहो और अपने व्यापार का विस्तार विदेशों में भी करो । इसमें हम तुम्हारी सहायता करेंगे । तुम्हें एतराज न हो तो हम तेरे व्यापार में हिस्सेदार भी बनेंगे'' ।

गुणगुप्त ने उनकी बातों पर न जाते हुए उनसे साफ़ कह दिया ''मेरे पुण्य कार्यों से कितने ही ग़रीबों व असहायों को सहायता पहुँच रही है। इसी में मुझे तृप्ति है । अब मेरा व्यापार भी खूब चल रहा है। अपने व्यापार को बढ़ाने की भी मेरी कोई इच्छा नहीं है'' कहकर उसने उन्हें भेज दिया ।

उसी समय के दौरान उस देश के राजा की पीठपर ज़हरबाद निकल आया । किसी भी प्रकार की दवा से उसका इलाज नहीं हो पाया । इससे राजा में निराशा घर कर गयी और उसने निर्णय-कर लिया कि मौत और अधिक समय तक टाली नहीं जा सकती । शासन का भार उसने मंत्रियों को सौंप दिया और साधु-संतों की संगति में कालयापन करने लगा ।

एक बार महानंद राजा को देखने आए । राजा की स्थिति पर दयाद्र होकर उन्होंने कहा ''महाराज, मानता हूँ कि आप स्वयं सज्जन हैं, सत्पुरुष हैं, परंतु राजा होने के कारण आपने अनजाने में कई अन्याय किये, अत्याचार किये । आप ही के कारण कुछ निर्दोषों को दंड भुगतने पड़े ; कुछ दोषियों ने अपने

को बचा लिया और बहुत-से पापी अंधाधुंध पाप किये जा रहे है । वे पाप ही ज़हरबाद बनकर अब आपकी पीठ पर उभर आया है । इस ज़हरबाद पर दवा का कोई असर नहीं होगा । इसकी चिकित्सा हो ही नहीं सकती । परंतु हाँ, आपके राज्य का कोई पुण्यात्मा नागरिक यदि अपना पुण्य आपको समर्पित करे और वह आपके भोग्य हो तो यह फोड़ा आप ही आप निकल जायेगा''।

महाराज ने आतुरता-भरे स्वर में कहा ''आप ही बताइये कि ऐसा पुण्यवान कहाँ है और कौन है?'' महानंद ने फ़ौरन गुणगुप्त का नाम सुझाया । महाराज ने गुणगुप्त को बुलवाया और अपनी इच्छा प्रकट की ।

गुणगुप्त ने कहा ''महाराज, मेरा पुण्य मेरे पुत्र के रोग को थोड़ा भी कम नहीं कर सका । मुझे लगता है कि मेरा पुण्य आपके काम नहीं आयेगा।''

तब महानंद ने हस्तक्षेप करते हुए कहा ''गुणगुप्त, तुम्हारे पिता के पापों को तुम्हारे पुत्र ने स्वीकार किया । इससे उसके पाप की कमाई पुनीत हो गयी । तुमने वारिस बनकर अनेकों पुण्य कार्य किये । उन पुण्य कार्यों के फलस्वरूप ही एक ही साल में तुम्हारी संपत्ति तिगुनी हो गयी । यह समझना कि तुम्हारा पुण्य तुम्हें रास नहीं आया, तुम्हारा अविवेक है''।

''स्वामी ! जायदाद कमाने के उद्देश्य से मैने पुण्य कार्य नहीं किये । मुझे केवल मेरे बेटे के स्वास्थ्य में सुधार और प्रगति चाहिये।'' गुणगुप्त ने कहा ।

''इसीलिए तुम्हारी संपत्ति में अपार वृद्धि हुई है। अब तुम्हारी संपत्ति का एक भाग तुम्हारे पिता का है । तीन भाग तुम्हारे अपने हैं । अन्यों की संपत्ति के बल पर तुम पुण्य कार्य करोगे भी तो उनसे कोई लाभ पहुँचनेवाला नहीं है । वे केवल तुम्हारी संपत्ति को बढ़ाने में ही सहायक बन सकते हैं । अपनी ही संपत्ति के आधार पर पुण्य करोगे तो तुम्हारी मनोच्छायें पूरी होंगी । तुम्हारे आशय सफल होंगे'' महानंद ने उसे समझाया ।

गुणगुप्त ने महानंद की बातों पर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा ''इसका यह मतलब हुआ कि अभी-अभी मेरी इच्छाओं को पूरा करनेवाला पुण्य मुझे प्राप्त हो रहा है । जो पुण्य अब मेरे पास है, उसे महाराज को दान में दे दूँ तो मेरे पुण्य कार्यों का कोई अर्थ ही नहीं रह जायेगा न? जहाँ था, वहीं रह जाऊँगा न? इससे मेरा बेटा जैसा था, वैसे ही रह जायेगा न? स्वामी, आप ही बताइये, अब मैं क्या करूँ?''

''तुम स्वयं निर्णय कर लो'' महानंद ने कहा ।

गुणगुप्त थोड़ी देर तक सोचता रहा और फिर कहा ''पुण्य से महाराज का जहरबाद निकल जायेगा

तो अभी, यहीं उसे दान में दे देना उचित समझता हूँ, क्योंकि, पता नहीं, मेरे बेटे के स्वास्थ्य के ठीक होने में और कितने साल लगेंगे।'' यों उसने अपना निर्णय सुनाया।

महानंद की अध्यक्षता में मंत्रोच्चारण के बीच गुणगुप्त ने अपना पुण्य राजा को सहर्ष समर्पित किया। राजा का ज़हरबाद फौरन ग़ायब हो गया।

राजा ने संतुष्ट होकर उसे मुँह मांगा इनाम देने का वचन दिया। गुणगुप्त ने महाराज को टोकते हुए कहा ''आप मुझे जो देना चाहते हैं, उससे प्रजा के लिए प्रयोजनकारी कार्य कीजिये। उनकी निस्वार्थ सेवा में मत रहिये'' बिदा लेकर वहाँ से वह चला गया।

गुणगुप्त के साथ साधु महानंद भी उसी के नगर में गये। तब तक धनगुप्त तीर्थयात्राएं पूरी करके लौट चुका था। तब सबके समक्ष एक विचित्र घटना घटी। उसके लाये हुए गंगा जल को पीकर मणिगुप्त सामान्य मानव हो गया।

वेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद राजा से कहा ''राजन्, गुणगुप्त ने कितने ही पुण्य कार्य किये। राज्य के हर एक ने उसकी भरपूर प्रशंसा की और उसे महान पुण्यवान पुरुष कहा। ऐसे पुण्यवान के पुण्यों से उसके बेटे का रोग दूर नहीं हुआ। परंतु धनगुप्त जैसे पापी की तीर्थयात्राओं के कारण यह संभव हो पाया। ऐसा क्यों हुआ? मेरे इस संदेहों के उत्तर जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे''।

विक्रमार्क ने कहा ''जिस क्षण धनगुप्त ने अपनी संपत्ति पुत्र को दे दी और पोते के स्वास्थ्य की कामना करते हुए तीर्थयात्रा के लिए निकल पड़ा, उसी क्षण से वह पापी नहीं रहा। किन्तु मणिगुप्त का स्वास्थ्य जो ठीक हुआ, वह धनगुप्त के लाये गंगाजल के कारण नहीं, बल्कि गुणगुप्त के पुण्य कार्यों के कारण ही संभव हुआ। तब तक उसके पुण्य कार्यों में स्वार्थ भरा था। उसका लक्ष्य अपने पुण्यों के द्वारा अपने बेटे का स्वास्थ्य ठीक करना था। किन्तु, निस्वार्थ भाव से उसने अपना पुण्य राजा को सहर्ष समर्पित किया, दान में दे दिया और इसी दान ने मणिगुप्त को साधारण मानव बनाया। उस स्वार्थहीन दान में इतनी शक्ति थी। दानो में पुण्य का दान सर्वोत्कृष्ट है। राजा के मौन-भंग में सफल बेताल, शव सहित गायब हो गया और पुन: पेड़ पर जा बैठा।

आधार ''वसुंधरा'' की रचना
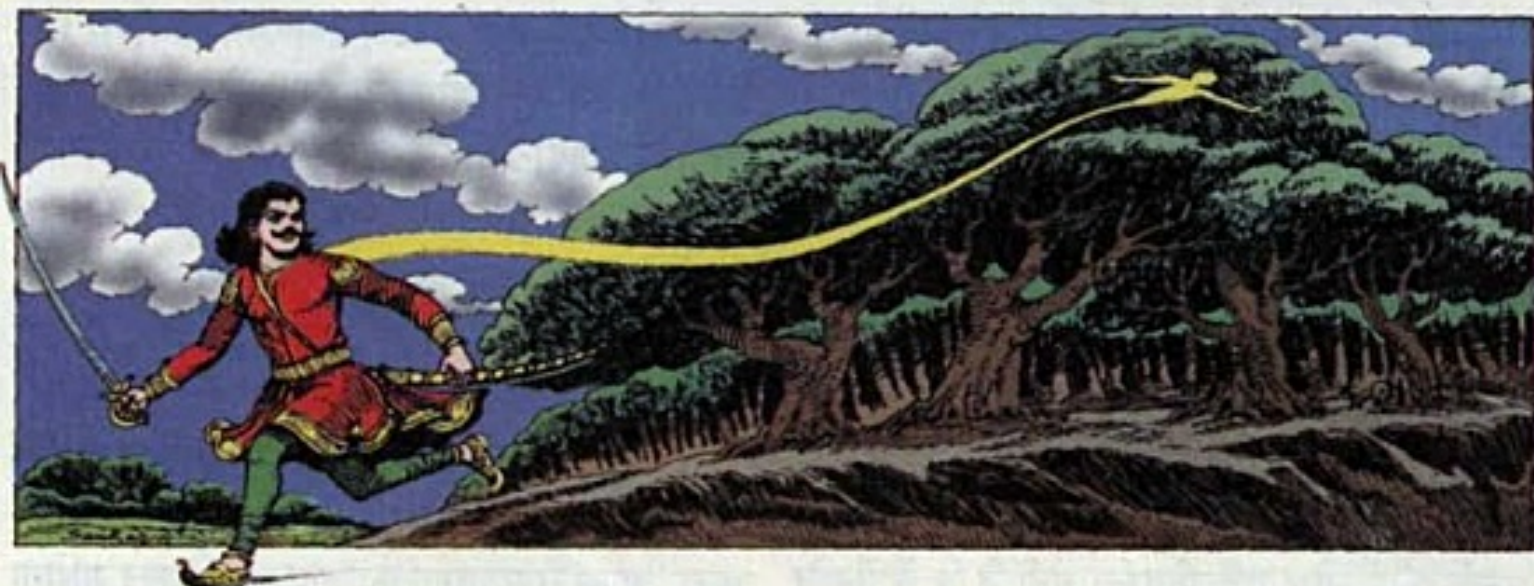
लुटेरों का भय

परंधाम एक सामान्य किसान था । उसकी बेटी के विवाह का दिन निश्चित हो चुका था। उसने निमंत्रण-पत्र अपने आदमियों के ज़रिये रिश्तेदारों को भेजे और यह समाचार भेजकर उन्हें सावधान भी कर दिया कि औरतें गहने पहनकर विवाह में भाग लेने न आवें, क्योंकि उस प्रदेश में लुटेरों से लुट जाने का डर है ।

सप्ताह के बाद जो विवाह संपन्न हुआ, उसमें बिना गहने पहने स्त्रियों ने भाग लिया । सबने मिल - जुलकर उस अवसर पर आनंदपूर्वक अपना समय बिताया ।

जब सभी रिश्तेदार लौटकर जानेवाले थे, तब एक अधेड़ उम्र की औरत ने परंधाम से पूछा, ''मुझे गाँव में मालूम हुआ कि यहाँ लुटेरों का कोई भय नहीं है । परंतु आपने सबको ख़बर भिजवायी कि यहाँ लुटेरों का भय है, इसलिए औरतें गहने पहनकर न आवें । आपने ऐसा क्यों किया?''

परंधाम ने हँसते हुए कहा, ''मेरे रिश्तेदारों में अमीर भी हैं और ग़रीब भी । मैं नहीं चाहता था कि अमीर औरतें ग़रीब औरतों को देखकर अपनी अमीरी पर गर्व करें। मैं यह भी नहीं चाहता था कि ग़रीब औरतें अमीर औरतों से ईर्ष्या करें । जब गरीब-अमीर का अंतर मिट जाता है, तभी सब मिल-जुलकर रह सकते हैं, एक साथ बैठकर बिना किसी भेद-भाव के आपस में गपशप कर सकते हैं । इसीलिए मैंने जान-बूझकर ही इन लुटेरों के भय की सृष्टि की ।

- विजयलक्ष्मी

शुभ दिपावली

बीता एक वर्ष और पुनः दिवाली आ गयी । चन्दामामा की ओर से उसके नन्हें पाठकों को दिवाली की ढेर सारी शुभकामनाएँ ।

बच्चों, तुम लोग अवश्य अपने इस त्योहार को मनाने के लिए तैयारियाँ कर रहे होंगे । बहुत सारे सामानों की सूची भी बना ली होगी । सामान्यतः दिवाली के लिए क्या-क्या वस्तुएँ तुम्हें चाहिए, वे सूचियाँ पहले ही बन चुकी होंगी । इस दिन को तुम लोग किस प्रकार मनाना चाहते हो वह भी सोच लिया होगा ।

परन्तु अपनी दिवाली को अधिक सुरक्षित और खुशहाल बनाने के लिए इस सूची को भी उसमें सम्मिलित कर लो । जिसमें यह बताया गया है कि इस दिन तुम्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं ।

यह रही तुम्हारी पहली सूची - जिसे ध्यान रखो :

✔ जब तुम पटाखे जलाओ तो इसका ध्यान रहे कि बड़े लोग तुम्हारे आस-पास रहें ।

✔ पटाखे जलाते समय हमेशा जूते या चप्पल पहनकर रखो । बिना चप्पल पहने इधर उधर न घूमो । क्योंकि, हो सकता है कि फूलझड़ी जलाकर फेंका गया गरम तार तुम्हारे पाँवों के नीचे आ जाए और पीड़ादायक बन जाए ।

✔ प्रयोग किए जा चुके पटाखों को एक कोने में रख दो, जिससे वे इधर-उधर बिखरे न रहें । उन्हें बुझाने के लिए उन पर पानी डाल देना चाहिए ।

✔ हमेशा एक बाल्टी पानी कहीं आस-पास रखो ।

✔ तुम्हारे द्वारा छोड़े गए रॉकेट आदि से किसी झोंपड़ी या गोदाम को कोई नुकसान न पहुँचे । याद रखो ! तुम्हारी हँसी-खुशी दूसरों के लिए कष्टदायक न बन जाए ।

और यह रही तुम्हारी दूसरी सूची :

नहीं करो	करो
✘ पटाखे जलाने के लिए माचिस का प्रयोग ।	● अगरबत्ती का प्रयोग करो ।
✘ जलाए हुए पटाखों को आस-पास बिखेर दो ।	● हमेशा उन्हें एक कोने में रखो ।
✘ पटाखे जलाते हुए टेरीकॉट के कपड़े पहनो ।	● हमेशा सूती कपड़े पहनो ।
✘ पटाखे घर के अन्दर जलाओ ।	● हमेशा खुली जगह पर पटाखे जलाओ ।
✘ पटाखे जलाने के लिए समीप ही, खुले हुए किसी फ्यूज बॉक्स का प्रयोग करो ।	● हो सकता है इससे आग लग जाए ।
✘ जहाँ मोटर-गाड़ियाँ खड़ी हों, वहीं पटाखे जलाओ ।	● उनसे दूर जलाओ ।
✘ झुककर पटाखे जलाओ ।	● सिर्फ अपने हाथों को मोड़ो । इससे तुम्हारे चेहरे और आँख का बचाव होगा ।

शुभकामना और शुभ दिवाली !

दुर्घटना के लिए प्राथमिक चिकित्सा

दिवाली के समय कुछ दुर्घटनाएँ सामान्यतः घट जाती हैं । जैसे आगजली की घटना । यह किसी बच्चे अथवा किसी के भी जलने का कारण बन सकती हैं और बहुत पीड़ादायक हो सकती हैं। ईश्वर न करें, फिर भी, यदि तुम पटाखे जलाते हुए अपने को घायल कर लो तो सबसे पहले इन कार्यों को करो ।

● जले हुए स्थान को ठंडे अथवा चलते हुए पानी से धोओ । पानी तब तक उस पर डालते रहो जब तक कि जलन बंद न हो जाए । कभी भी बर्फ़ या बर्फ़ के पानी का प्रयोग नहीं करना चाहिए ।

● यदि कभी तुम्हारे छाती या नीचले पेट पर जल जाए तो कभी भी अपने कपड़े निकालने की कोशिश न करो । यह अधिक घाव पैदा कर सकता है । उस पर पानी डालो ।

● घाव पर चेन, अंगूठी, कड़ा, चूड़ी आदि के लगने से पीड़ा और अधिक होती है। अतः इन्हें निकाल देना चाहिए ।

● कभी भी जले हुए स्थान पर क्रीम या तेल मत लागओ क्योंकि इससे घाव को साफ करने तथा पट्टी करने में काफी कठिनाई होती है ।

● सम्भवतः कभी यदि कोई चिनगारी तुम्हारी आँख में चली जाए तो लगातार दर्द समाप्त होने तक उसे स्वच्छ जल से धोते रहो ।

● छोटे-मोटे घावों पर पट्टी करने की आवश्यकता नहीं रहती । इस पर ऐन्टी सेप्टिक क्रीम लगाना चाहिए । लेकिन गहरी घाव पर हमेशा पट्टी बाँधनी चाहिए ।

● जले हुए स्थानों पर जमी पपड़ी को कभी न निकालो । इससे संक्रमण हो सकता है । उन्हें अपने आप सूखने दो ।

ऊपर दी गई सारी बातों को कभी न भूलो । इलाज में बिल्कुल देरी न करें। अपने पारिवारिक चिकित्सक से तुरंत सम्पर्क करें ।

वैसे भी, बीमारी से बचाव, बीमारी के इलाज से कहीं अच्छा है । यदि तुम कुछ सामान्य बातों को ध्यान में रखकर तथा पटाखे खेलते समय सावधानी रखो तो, तुम्हारी दिवाली किसी भी दुर्घटना का शिकार नहीं होगी । एक बार फिर ।

शुभ दिपावली !

इस माह किनकी जयन्ती है

महात्मा गाँधी

मोहन दास करमचन्द गाँधी का जन्म गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ । जो उस समय एक सामंती राज्य था। इनके पिता करमचन्द गाँधी अथवा काबा गाँधी उस समय पोरबन्दर के राजा के यहाँ मुख्य मंत्री थे । बाद में उन्होंने राजकोट के राजा के यहाँ भी मुख्य मंत्री पद पर कार्य किया।

मोहनदास की औपचारिक पढ़ाई पूरी होने के बाद उनके पिता ने उन्हें (कानूनी शिक्षा) वकालत पढ़ने के लिए लंदन भेज दिया । तब वे १८ वर्ष के थे । ३ वर्षों बाद वे बाईरेस्टर की डिगरी प्राप्त कर भारत लौट आए । इसके पश्चात कस्तूरबा से इनका विवाह हो गया ।

१८९२ में गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका गए, जहाँ भारत की ही भाँति अंग्रेजों का सर्वत्र राज्य था । वहीं पर उन्हें अंग्रेजों के अमानवीय व्यवहार का अनुभव हुआ । एक बार उनके पास रेलगाड़ी का प्रथम श्रेणी का टिकट होते हुए भी उन्हें उस डिब्बे से बाहर धकेल दिया गया । क्योंकि उस डिब्बे में एक अंग्रेज चढ़ा जो एक भारतीय के साथ यात्रा नहीं करना चाहता था । भारतीयों के प्रति गोरों का यह व्यवहार देखकर गाँधीजी ने अफ्रीका के उस भाग में रह रहे भारतीयों के न्याय के लिए लड़ने का दृढ़ निश्चय किया । जिसके लिए कानून के क्षेत्र में अपने इतने अच्छे और उज्वल भविष्य को भी दाव पर लगा दिया । उन्होंने इस अन्याय के प्रति अफ्रीका में एक अभियान छोड़ दिया । उनका यह प्रयास अविस्मरणीय है ।

१९१४ में पुनः वे भारत आ गए । अफ्रीका में किए जा रहे कार्यों के चलते उस समय तक भारत में उनके नाम को काफी प्रसिद्धि पहले ही मिल चुकी थी । चार साल बाद उन्होंने बिहार के चम्पारन जिले में किसानों को एकत्र कर, पौधे लगाने वाले विदेशी लोगों द्वारा किए जा रहे अत्याचार के विरुद्ध एक अहिंसक अभियान आरम्भ किया । इसके पश्चात १९१९ में पंजाब के जलियाँवाला बाग में निहत्थे मासूमों की बर्बर हत्या कर ब्रिटिश सरकार ने एक बार पुनः अपनी क्रूरता का परिचय दिया । फलस्वरूप गाँधीजी ने अंग्रेज सरकार के साथ सहयोग करने से मना कर दिया । इस प्रकार एक वर्ष के भीतर ही वे राष्ट्रीय अभियान के नेता बन गए ।

उन्होंने दूसरी ओर भारत की सामाजिक दशा को सुधारने तथा गरीबों को आत्म-निर्भर बनाने की ओर ध्यान दिया । जिसके लिए स्वदेशी अभियान के तहत चरखा काटना और खादी पहनने का नारा दिया । इसके अतिरिक्त उन्होंने अश्पृश्यता आदि को हटाने पर भी काफी बल दिया । १९३० में उन्होंने नमक आन्दोलन के तहत साबरमती से डांडी तक पैदल यात्रा की जिसमें काफी लोगों ने भाग लिया ।

इस यात्रा का उद्देश्य, सरकार को नमक के लिए कर न देना तथा गरीबों को समुद्र के पानी से नमक बनाने के लिए उत्साहित करना था । तब से अब तक नमक पर कोई कर नहीं लिया जाता । गाँधीजी ने एक के बाद एक आन्दोलन किए और समय-समय पर वे जेल भी गए । उनके राजनीतिक जीवन ने १९४२ में एक नया मोड़ तब लिया जब उन्होंने ब्रिटिश सरकार को 'भारत छोड़ो' का संदेश भेजा । इस आन्दोलन ने ब्रिटिश सरकार को यह सोचने पर विवश कर दिया कि उन्हें शीघ्र ही भारत छोड़ देना चाहिए । भारत को १५ अगस्त १९४७ में स्वतंत्रता प्राप्त हो गई, लेकिन भारत और पाकिस्तान का बंटवारा हो गया । कुछ लोगों का मानना है कि गाँधीजी की ही किसी नीति के कारण, यह विभाजन हुआ । इस महात्मा की ईहलीला ३० जनवरी १९४८ में तब समाप्त हो गई जब एक आदमी ने उनकी गोली मारकर हत्या कर दी ।

गाँधीजी का जीवन समाप्त अवश्य हो गया परन्तु वे भारत के जन-जन के हृदय में राष्ट्रपिता के नाम से जीवित हैं ।

10

[कौंडिन्य देश का युवराज विजयदत्त राज्याभिषेक के लिए सन्नद्ध हो गया । स्वर्ण सिंहासन की प्रथम जो दो सीढ़ियाँ थीं, उनपर सालभंजिकाओं के रूप में स्थित सत्यशक्ति एवं धर्मशक्ति के संदेहों को बड़ी ही दक्षता के साथ दूर किया । तीसरी सीढ़ी पर स्थित न्याय सालभंजिका ने विजयदत्त के न्याय-निर्णय की परीक्षा करनी चाही । इसके लिए उसने न्यायवर्धन महाराज के न्याय-पालन के बारे में बताया और साथ ही उनके समक्ष लाये गये तीनों झगड़ों के बारे में विशद रूप से बताने लगा।] अब आगे :

उस दिन के न्याय-निर्णय का कार्यक्रम यों समाप्त हो गया । कुमारकेतु पहले से ही बड़ी ही श्रद्धा के साथ न्याय-निर्णय की प्रक्रिया को सुनता रहा । इसी को लेकर राजमंदिर में पहुँचने तक वह सोचता-विचारता रहा ।

रात को महाराज ने बड़े ही प्यार से उसे अपने पास बुलाया और कहा ''पुत्र, तुमने तो न्याय-निर्णय की प्रक्रिया को बखूबी सुना और देखा होगा । मैं इसी के सम्बन्ध में एक बात कहने जा रहा हूँ । ध्यान से सुनो । प्रमुख व्यापारी रत्नगुप्त का इकलौता बेटा है, हेमगुप्त । वह जुआरी है, पियक्कड है और है अव्वल दर्जे का निकम्मा । पिता की सप्ताह भर की कमाई एक ही घंटे में उड़ा देने वाला अपव्ययी है, अधम है । अब मैं न्याय-निर्णय के बारे में तुम्हारे विचार और तुम्हारी समीक्षा जानने के लिए उत्सुक हूँ ।''

लक्ष्मी गायत्री

मंत्रपूरित इस खड्ग चंद्रहास को भी भेंट के रूप में पा सकोगे । अगर इसमें तुम असफल हो गये तो अब तक तुम्हारा श्रम व्यर्थ ही समझो । तुम्हारी आँखों के सामने प्रकाश-पुँज को फैलानेवाला यह सिंहासन आप ही आप अदृश्य हो जायेगा और पूर्वस्थल पर पहुँच जायेगा । अतः विजयदत्त, प्रयत्न करो । विजयी भव, दिग्विजयी भव ।''

श्रद्धापूर्वक सुनते हुए विजयदत्त ने तुरंत कहा, ''ऐ न्यायमूर्ति, अपनी विलक्षणता एवं सोचने की क्षमता के बारे में मेरा स्वयं कहना अच्छा नहीं होगा । ऐसी अतिशयोक्तियाँ स्वयं मैं पसंद नहीं करता । मेरी व्याख्याओं को सुनने के बाद यह निर्णय लेने की जिम्मेदारी आपकी है कि मैं ऐसी शक्ति रखता हूँ या नहीं ।'' फिर उसने यों कहना शुरू किया ।

न्यायवर्धन की कही उस एक बात को सुनते ही कुमारकेतु का मुख प्रफुल्लता से विकसित हुआ।

इतना सब कुछ कहने के बाद सालभंजिका रुक गयी और विजयदत्त से पूछा ''युवराज, न्यायवर्धन राजा में जितनी न्याय विलक्षणता है, उतनी क्या तुममें भी विद्यमान है? अगर सचमुच ही तुममें हो तो कुमारकेतु से बढ़कर तुम ही इस पर अधिक प्रकाश डाल सकते हो । अगर तुम इसे बताने के योग्य साबित हुए तो इस अद्भुत धर्मपीठ पर सर्वलोकों में अद्वितीय इस स्वर्ण सिंहासन पर आसीन होने के ही हक़दार नहीं बनोगे, बल्कि इस सिंहासन के सृष्टिकर्ता पुलिंद भट्टारक की असमान सृष्टि,

''संपूर्ण मानव जाति को तीन वर्गों में विभजित कर सकते हैं । वे हैं : उत्तम, मध्यम और अधम । अपनी-अपनी बुद्धि व संस्कारों के कारण हर मानव, इन तीनों वर्गों में से किसी न किसी वर्ग का होकर ही रहता है । न्याय के लिए आये ये व्यक्ति, इन तीनों वर्गों में से किस वर्ग के हैं, इसका निर्णय राजा करता है । इसके लिए राजा को अपनी सूक्ष्म बुद्धि को उपयोग में लाना चाहिये और समझना चाहिये । राजा जितनी अच्छी तरह से सोच पायेगा, उतनी ही अच्छी तरह का फैसला दे पायेगा । वह यों है - उत्तम दोषी मनुष्य को दंड के रूप में एक छोटी-सी बात पर्याप्त है । मध्यम को दंड का

कारण विवरण सहित बताना होगा और उसे छोटा-सा दंड देना पर्याप्त होगा । अधम एक छोटे सांप के बराबर है । लोकोक्ति है कि छोटे-से सांप को बड़ी लाठी से मारना चाहिये । अधम का अपराध छोटा भी क्यों न हो, उसे बड़े पैमाने पर ड़रा-धमकाना चाहिये और यह ज़रूरी भी है । साथ ही उसे दंड भी मिलना चाहिये ।

आत्माभिमानी छोटा-सा अपराध करने पर भी मन ही मन दुखी होता है अपने किये पर पछताता है । उत्तम दोषी परिस्थितियों के प्रभाव में आकर ग़लती कर बैठता है पर आवेश के कम हो जाने के बाद अपनी ग़लती को स्वीकार कर लेता है । मध्यम दोषी अपनी ग़लती पर दुखी नहीं होता । अधम अपनी ग़लती को मानने से भी इनकार करता है ।

राजा को चाहिये कि उस के पास जो व्यक्ति आते है, उनके बारे में जाने कि उक्त तीनों वर्गों में से वे किस वर्ग के हैं । न्याय-पालन में यह बहुत ही मुख्य व प्रधान सूत्र है । इसके अतिरिक्त राजा को चाहिये कि वह अपने राज्य के प्रमुख व्यक्तियों की गतिविधियों की जानकारी रखे । यह जानकारी समय-समय पर प्राप्त करनी चाहिये । उनकी जीवन-पद्धति तथा उनके अंतरंगिक जीवन के बारे में भी कुछ हद तक जानना ज़रूरी है । इसके लिए अपने गुप्तचरों का सहयोग प्राप्त करना चाहिये ।

न्यायवर्धन ने जिन तीन मामलों के बारे में सुनवाई की, उनमें से प्रथम दोषी है वीर । वह मध्यम वर्ग का है । उसके द्वारा की गयी ग़लती, तथा उसके संबंध में राजा से सुनाया गया न्याय-निर्णय प्रशंसनीय है, न्याय सूत्रों के अनुकूल है ।

अब उत्तम वर्ग के दोषी धनगुप्त के ही विषय को लीजिये । वह उत्तम वर्ग का दोषी है । सुनवाई और फ़ैसला भी गूढ़ ही रहे । फरियादी मणिकर्ण को भी मालूम नहीं हो पाया कि राजा ने किसे दोषी ठहराया । इस फ़साद को और राजा के फ़ैसले को समझना हो तो सुभद्र देश के प्रमुख व्यक्तियों में से एक रत्नगुप्त के अंतरंगिक जीवन-पद्धति को जानने की आवश्यकता है ।

रत्नगुप्त विश्वसपात्र तथा अच्छे स्वभाव का है । मणिकर्ण ने जब अन्य व्यापारियों से उसके

बारे में पूछा तब सबने उसके बारे में अच्छी राय दी और यह सच भी है। ऐसा भला आदमी जब कोई अपराध कर बैठे तो उसके पीछे अवश्य ही कोई मुख्य कारण होगा। और वह कारण है, रत्नगुप्त का इकलौता बेटा हेमगुप्त। दुर्व्यसनों में फंसे ऐसे बेटे को उसका पिता यथासाध्य सुधारने की कोशिश करता है। जब यह उनसे हो नहीं पाता तो ऐसे पिता चाहते हैं कि जितना हो सके कमा लें और बेटे के भविष्य को सुरक्षित रखें।

न्यायवर्धन महाराज को रत्नगुप्त के जीवन के बारे में बहुत कुछ मालूम है। इसलिए वे ताड़ पाये कि रत्नगुप्त ने आसानी से कमाने के लिए यह सरल मार्ग चुना और विदेशी युवक को धोखा देने से नहीं हिचकिचाया। ईमानदार आदमी जब ज़ुर्म करता है, तब वह इतना ही कहकर अपने को बचाने की कोशिश करता है कि मैंने यह काम नहीं किया। वह अपने समर्थन में कहानियाँ नहीं गढ़ता। रत्नगुप्त ने भी यही किया। इससे राजा का संदेह और दृढ़ हो गया। ''आपका बेटा कुशल तो है'' कहकर एक और बाण फेंका। उस प्रश्न को सुनते ही रत्नगुप्त की समझ में आ गया कि मेधावी राजा ने असली बात जान ली। तब उसका मुख विवर्ण हो गया। उसके मुख की कांति जाती रही। राजा ने उसकी इस स्थिति को देखकर उसे एकांत में भेजा।

उत्तम दोषी के लिए उसकी अंतरात्मा ही एक बड़ा न्यायाधिकारी है। वह न्यायाधिकारी एकांत में और हावी हो जाता है। वह बारंबार दोषी को याद दिलाता है कि तुमने ग़लती हुई, तुमसे ग़लती हुई।

रत्नगुप्त ने भी एकांत में ऐसी ही व्यथा का अनुभव किया। इसीलिए लौटते-लौटते उसके चेहरे का रंग उड़ गया। तब राजा ने रत्नगुप्त की मर्यादा का भंग न करने के उद्देश्य से उससे कहा ''मणिकर्ण तुम्हारे पुत्र के समान है। तुम्हें तो चाहिये कि पिता की तरह उसे प्यार करो, उसका आदर करो, न कि इस प्रकार उसे जाल में फंसाओ, धोखा दो।'' अर्थपूरित संकेतों द्वारा उसे यह बात कही। स्वयं मेधासंपन्न रत्नगुप्त को महाराज की यह चेतावनी समझ में आ गयी।

राजा ने उसे अपमानित होने से बचा लिया, इसके लिए उसने अपनी कृतज्ञता जतायी । महाराज जानना चाहते थे कि रत्नगुप्त ने मणिकर्ण को माल वापस दिया कि नहीं, इसीलिए उसे दूसरे दिन आने को कहा । साथ ही वे उसे सावधान करना चाहते थे कि भूलकर भी कहीं भी रत्नगुप्त का रहस्य किसी को न बतावे । गूढ़ पद्धति में यों द्वितीय झगड़े का फैसला हुआ, जिसका यह स्थूल रूप है ।

अब रही तीसरे मामले की बुढ़िया की बात। वह अधम वर्ग की मूर्ख स्त्री है । इसीलिए राजा ने उसके साथ कठोरता के साथ व्यवहार किया और उसे जेल भेजा ।

"ऐ न्यायशक्ति, उन तीनों झगड़ों के विषयों पर मेरा व्याख्या इतना ही है" यों उसने अपना कथन पूरा किया ।

विजयदत्त के उत्तर के पूरे होते ही तृतीय सालभंजिका ने अपना हर्ष व्यक्त करते हुए कहा "शाबाश युवराज, शाबाश ! पुलिंद भट्टारक ने जिस मेधावी की कल्पना की, वह और कोई नहीं, तुम्ही हो । उस महान तंत्रवेत्ता की कल्पना के वारिस, और कोई नहीं, तुम्ही हो । उस महान तंत्रवेत्ता की सृष्टि है यह स्वर्णसिंहासन । वह भाग्यशाली तुम ही हो, जो इस पर आसीन होने की योग्यता रखता है । द्वितीय पौरसत्व के नाम से चक्रवर्ती बनकर अखंड कीर्ति व प्रतिष्ठा कमाओगे । निश्चिन्त, अब तुम इस सिंहासन पर आसीन हो सकते हो । तुम्हें हमारा

हृदयपूर्वक स्वागत ।''

तीनों सालभंजिकाओं ने मुक्त कंठ से कहा ''जय हो, विजयदत्त युवराज, जय हो । पौरस्वत चक्रवर्ती, जय हो । विजयी भव, द्विग्विजयी भव ।''

उन जय-जय की ध्वनियों के साथ-साथ पूरा सभा भवन तालियों से गूँज उठा । तब विजयदत्त ने अपने दायें पाँव को आखिरी सीढ़ी पर रखा । दूसरे ही क्षण हैहय वंशजों की कुलदेवी गायत्री के पाँवों के समीप ही जो पद्म पुष्प के आकार का शिल्प सुशोभित था वह पद्म पुष्प ही की मानिंद के विशाल रूप में विकसित हुआ। पद्म के बीचों बीच माणिक जड़ा हुआ था । वह नवरत्न खचित म्यान में चंद्रहास खड्ग के रूप में परिवर्तित होकर पद्म पुष्प के ऊपर सीधे खड़ा हो गया ।

विजयदत्त ने गायत्री देवी के पैरों को प्रणाम किया और चंद्रहास को अपने हाथ में लेकर आँखों से उसका स्पर्श किया । दूसरे ही क्षण पद्म ने अपना असली रूप धारण किया । वेद विद् पंडितों ने मंत्रों को पढ़ते हुए विजयदत्त को महाराज बनाया ।

उस रात को वृद्ध राजा श्रीदत्त घोड़े बेचकर सोया । तड़के ही कोई आवाज़ सुनायी पड़ी तो वह चौंककर उठ बैठा । उसने देखा कि जो कबूतर श्रीलेखा के आने के दूसरे ही दिन आया था, वही कबूतर गवाक्ष के पास अपने पंखों को फड़फड़ाता हुआ बैठा हुआ है । श्रीदत्त के जगाते ही वह उसके पास आकर बैठ गया । श्रीदत्त ने प्यार से उसकी पीठ को सहलाया और उसके पैरों में बंधे पत्र को ले लिया ।

''स्वर्ण सिंहासनाधीश विजयदत्त को हमारी शुभ कामनाएँ व शुभ आशीष ।'' उसपर माधवसेन व वसुमति के हस्ताक्षर थे । उस पत्र को पढ़ते ही श्रीदत्त खुशी से फूल उठा । उसने यह समाचार पुत्र और पुत्रवधु को भी भिजवाया।

इसके कुछ दिनों बाद पूर्व योजना के अनुसार ही कालिंदी, चंपक, कुँद देशों की सेनाओं ने कौंडिन्य देश पर आक्रमण किया । युद्ध के शुरू होते ही पहले ही से माधवसेन के दिये गये आदेशों के अनुसार कालिंदी की सेनाएँ, चंपक देश के सैनिकों को मौत के घाट उतारने लगीं । यह देखते हुए कुंद देश की

सेनाओं की समझ में नहीं आया कि आख़िर लड़ें किससे? वे दिग्भ्रांत रह गये । मरालभूपति को शक हुआ कि दाल में काला कुछ ज़रूर है । उसे यह समझने में देर नहीं लगी कि माधवसेन ने उसके साथ छल किया ।

विजयदत्त का अनुमान सही निकला । उसने देखा कि उसके ससुर माधवसेन की सेनाएँ भी शत्रु-संहार में लगी हुई हैं तो उसका उत्साह द्विगुणीकृत हो गया । मंत्रबद्ध अपने चंद्रहास को लिये पंच कल्याणी अश्व पर आरूढ़ होकर वह बिजली की तरह शत्रु सेना पर टूट पड़ा ।

अंधेरा होते-होते चंपक सेना का लगभग नाश हो गया । कुँद देश के सेनाधिपति ने अपनी हार मान ली और वह विजयदत्त के अधीन हो गया । चंपक राजा मराल भूपति और उसका बेटा युवराज चक्रभूपति विजयदत्त के हाथों क़ैद हुए ।

अब माधवसेन को दामाद के सामने आने का साहस हुआ । उसे देखते ही उसके हाथों को पकड़ते हुए उसने कहा ''विजय! मैं अपनों के ही साथ गद्दारी करने पर तुल गया ! सार्वभौम बनने की मेरी महात्वाकांक्षा ने मुझे गुमराह कर दिया । अच्छा हुआ, सही समय पर मैं जागरूक हो गया । नहीं तो मेरा सर्वनाश हो जाता । अपनी ग़लती के लिए मैं बहुत शर्मिंदा हूँ । मुझे क्षमा करना ।

विजयदत्त ने मुस्कुराते हुए कहा ''जो हुआ, भूल जाइये । कम से कम अब तो जान गये कि यह देश भी आप ही का है ।''

विजयदत्त अपनी इस विजय से संतृप्त नहीं हुआ । भारी सेना को लेकर वह दिग्विजय यात्रा पर निकल पड़ा । यह बात पूरे दक्षिणापथ में आग की तरह तब तक फैल चुकी थी कि तीन बड़े राज्य चंपक, कालिंदी एवं कुंद विजयदत्त के अधीन हो गये ।

अब छोटे-छोटे राज्यों के अधिपतियों ने आपस में बात कर ली और वे भी विजयदत्त के अधीन हो गये । अब उन्होंने निश्चय किया कि वे सामंत राजा बनकर विजयदत्त के अधीन रहेंगे ।

यों विजयदत्त ने द्वितीय पौरस्वत के सम्मान से सुसज्जित हो अपने हैहय वंशजों के हाथों से छूटे दक्षिणापथ के सार्वभौमत्व को अपने कब्ज़े में कर लिया और अपना नाम सार्थक किया ।

समाप्त

१०. प्रेम की विजय, मृत्यु की पराजय

उस दिन संदीप का जन्म-दिन था, इसलिए शाम को उसके दस बारह दोस्त उसके घर में जमा हुए । जन्म-दिन के उत्सव की समाप्ति के बाद सामने के बग़ीचे में एक पेड़ के नीचे वे सबके सब इकट्ठे हुए ।

"दादाजी, आपको गाना बहुत पसंद, है ना? मेरी सहेलियों में से दो बहुत अच्छा गाती हैं । उनका गाना सुनेंगे तो, मुझे पूरा विश्वास है कि आप उन्हें बहुत पसंद करेंगे" श्यामला ने देवनाथ से कहा ।

"अच्छा, ऐसी बात है! तो चलो," कहते हुए देवनाथ श्यामला के पीछे-पीछे चले दिए।

उनके वहाँ पहुँचने के पहले ही लड़कों ने एक तमाल वृक्ष के नीचे उनके बैठने के लिए एक कुर्सी का प्रबंध किया था। सब बच्चों ने दादाजी को सविनय प्रणाम किया । उनके बैठने के बाद सभी बच्चे ज़मीन पर बिछे कालीन पर बैठ गये ।

श्यामला के साथ ही पढ रही दो लडकियों ने 'जय जय जनयित्री' नामक मधुर गीत गाया ।

"तुम दोनों ने बहुत अच्छा गाया । मैंने तुम लोगों से ऐसी भेंट की आशा ही नहीं की थी" देवनाथ ने कहा ।

"हमने गाना सुनाया, इसके लिए हमें आप क्या भेंट देंगे दादाजी?" उन दोनों लड़कियों ने पूछा । उनके इस प्रश्न पर सभी बच्चे हंस पड़े और सबने तालियाँ बजायी ।

"बताओ तो सही, तुम्हें क्या चाहिये? अभी मंगवाऊँगा । चाकलेट चाहिये या आईसक्रीम? नहीं तो कुछ और चाहिये? बोलो!" देवनाथ ने स्नेह-भरे स्वर में पूछा ।

"हमने अभी-अभी वे सब खा लिये । हमें उनकी कोई ज़रूरत नहीं ।" बच्चों ने कहा । देवनाथ ने पूछा, "तो फिर क्या चाहिये, कहो न?"

"एक है, जो हमें कोई नहीं दे सकता, सिवाय

विश्वावसु

की गाथ
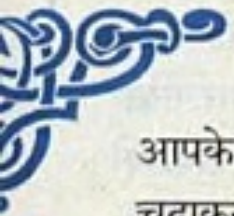
आपके । वही हमें चाहिये'' बच्चों ने कहा । भौंहें चढ़ाकर देवनाथ ने इस अर्थ में पूछा ''वह है क्या?''

''कहानियाँ दादाजी, कहानियाँ । भारत की संस्कृति को बतानेवाली कहानियाँ हमें चाहिये'' बच्चों ने एक होकर कहा ।

देवनाथ ने मुस्कुराते हुए बच्चों को एक बार देखा।

''दादाजी, परसों आपने मार्कंडेय की कहानी सुनायी । तब आपने कहा था कि मार्कंडेय मृत्यु पर विजय पानेवालों में से एक हैं । आपने उस समय यह भी कहा था कि ऐसे भी बहुत से महानुभाव हैं, जो मृत्युलोक गये और मृत्यु पर विजय प्राप्त करके लौटे । ऐसे ही एक अमर आदमी की कहानी सुनाइयेगा ।'' बच्चों ने सविनय प्रार्थना की ।

''ज़रूर बताऊँगा'' फिर देवनाथ ने कहानी यों बतायी ।

अरण्य समीप के आश्रम में एक मुनि बालक रहा करता था । उसका नाम रूरू था । अरण्य के मुनियों की वह सेवा-शुश्रूषा करता था और उनसे उसने समस्त विद्याएँ सीखीं । सभी शास्त्रों का उसने अध्ययन किया । सुंदर और सुडौल रूरू सबकी प्रशंसा का पात्र बना ।

उसी आश्रम में प्रमद्वरा नामक एक कन्या भी थी । वह सुशील व अत्यंत सुंदर थी । प्रमद्वरा व रूरू ने अपने युवावस्था में पदार्पण किया । दोनों एक दूसरे के प्रति आकर्षित हुए । उनके हृदयों में प्रेम जगा । बड़ों का आशीर्वाद पाकर विवाह रचाने का भी उन्होंने संकल्प किया।

होनेवाली अपनी पत्नी को फूलों की माल समर्पित करने के उद्देश्य से एक दिन प्रातःकाल ही वह जंगल निकल पड़ा । प्रकृति के पुष्पों की इस देन को उन दिनों में स्वर्ण आभूषणों से भी बढ़कर मानते थे ।

स्नान करने नदी की तरफ़ जाती हुई प्रमद्वरा ने रूरू के कुटीर में झांककर देखा । वह अंदर दिखायी नहीं पड़ा । उसे लगा कि वह जंगल ही गया होगा । वह भी उसी की खोज में जंगल की तरफ़ गयी । इसके पहले प्रमद्वरा ने रुरु को यह कहकर सावधान भी किया था कि पौ फटने के पहले जंगल में न जाए । क्योंकि उस समय क्रूर मृग वहाँ स्वच्छंद होकर विचरते रहते हैं । फिर भी उसे देखने के लिए वह जंगल की तरफ़ गयी ।

उसने दूर से देखा कि रुरु फूल तोड़ रहा है । बरगद की एक जटा के सहारे बड़ी ही रम्य भंगिमा

में खड़ी प्रमद्वरा को देखकर रूरू के आनंद की सीमा न रही । परन्तु वह उसके समीप न आया।

जिस पर वह नाराज़ हुई, रूठी । रुरु भली-भांति जानता था कि जैसे ही ये पुष्प वह अपनी प्रियतमा को समर्पित करेगा, वैसे ही उसका क्रोध हवा में उड़ जायेगा और वह प्रसन्न मुद्रा में उसका स्वागत करेगी। किन्तु दुर्भाग्यवश ऐसा कुछ नहीं हुआ ।

प्रमद्वरा ज़मीन पर रेंगते हुए किसी प्राणी को देखकर डर गयी, चिल्लायी और गिर पड़ी । रूर तुरंत वहाँ पहुँच गया । एक बड़ा सर्प तेज़ी से रेंगता हुआ झाडियों के अंदर चला गया । वह बड़ा ही भयंकर विषैला सर्प था । उसको डसने से किसी का जीवित होना असंभव है । रूर ने प्रमद्वरा को अपनी गोद में लिया और उससे बोलने की कोशिश की । परंतु कोई लाभ नहीं हुआ क्योंकि तब तक वह मर चुकी थी ।

रूरू को लगा कि एक क्षण के लिए मानों समय स्तंभित हो गया हो । धीरे-धीरे वह संभल गया और अपनी प्रेयसी को बचाने का उसने दृढ संकल्प कर लिया । पूरा दिन वह वहीं बैठा रहा और देवी देवताओं से अपनी प्रेयसी को प्राण-दान देने के लिए प्रार्थनाएँ करता रहा ।

आधी रात के समय दिव्य ज्योति से भरा कामदेव उसके सम्मुख प्रत्यक्ष हुआ । अकस्मात् घटी इस घटना से प्रिय का हृदय अपनी प्रेयसी के लिए कितना आकुल होता है, उसके प्राण कितने छटपटाते हैं, यह सत्य कामदेव से छिपा नहीं है । उसके हृदय में उसके प्रति सहानुभूति जागी और उसने रूरू को एक रहस्य बताया । जिससे मृत्युलोक में पहुँचकर वह अपनी प्रेयसी प्रमद्वरा की आत्मा को देख सकने की शक्ति प्राप्त कर सकता है ।

रूरू ने मृत्युलोक में प्रवेश किया और प्रमद्वरा की आत्मा को पहचाना । किन्तु मृत्युलोक के यमभटों ने उसे उससे बातें करने से रोका । रूर और यमभटों के बीच में बहुत देर तक बातें होती रही । यमधर्मराज भी आख़िर उसके सच्चे और पवित्र प्रेम पर संतुष्ट हुए और प्रमद्वरा को पुनःजीवन प्रदान करने के लिए अपनी स्वीकृति दी । किन्तु उन्होंने इसके लिए एक शर्त रखी । प्रमद्वरा की आयु ख़तम हो चुकी है । इसलिए रुर अपनी आयु का आधा भाग उसे समर्पित करे, तभी वह पुनर्जीवित हो सकती है । रुर ने यमराज की इस शर्त को सहर्ष स्वीकार किया और अपनी आधी आयु समर्पित की ।

दूसरे ही क्षण प्रमद्वरा उठकर बैठ गयी । लगता था, मानों वह अभी-अभी नींद से जागी हो । दोनों का विवाह हुआ और उन्होंने आदर्श दांपत्य जीवन बिताया । अमर प्रेमियों के नाम से वे विख्यात हुए।

कहानी सुनाने के बाद देवनाथ ने बच्चों से पूछा ''क्या तुमने इस कहानी में निहित मर्म को जान लिया ? क्या तुम बता सकते हो कि इसका संदेश क्या है?''

''कहानी अद्भुत है, पर हमारी समझ में नहीं आया कि ''यों..., कहते हुए बच्चे रुक गये ।

''हम साधारणतया समझते और मानते हैं कि जन्म और मृत्यु पारस्परिक विरोधी हैं । सच कहा जाए तो मृत्यु निर्दिष्ट जीवन का एक रूप है । देखते-देखते वह आँखों से ओझल हो जाती है । मृत्यु का एकमात्र विरोधी है प्रेम । जब कोई व्यक्ति मर जाता है तब उस व्यक्ति के प्रति हममें जो स्नेह व प्रेम होते हैं, उनके अनुपात में हमारा विषाद व शोक भी हमें यही सत्य सिखाता है । यह प्रेम बड़ा ही विलक्षण व भिन्न होता है । प्रेम कभी नहीं मरता, वह अमर है । त्याग ही उसका प्राण है । हमारे पुराणों की अन्य कहानियों में से एक और कहानी भी हमें यही बताती है । तुममें से क्या कोई बता सकोगे कि वह कहानी क्या है?'' यों कहकर देवनाथ रुक गये।

''सावित्री-सत्यवान की कथा का ही आप वर्णन कर रहे हैं न?'' एक लड़के ने कहा ।

''हाँ, तुमने ठीक कहा । क्या तुमने वह कहानी महाभारत में पढ़ी?'' देवनाथ ने पूछा ।

''नहीं दादाजी ! मेरी माँ, श्री अरविंद द्वारा रचित 'सावित्री' महाकाव्य का पठन हर दिन करती है ।'' लड़के ने कहा ।

''बहुत अच्छा । महायोगी व महाकवि श्री अरविंद ने इस काव्य में कितने ही प्रगाढ़ व गंभीर सत्यों पर प्रकाश डाला । शायद आप सब लोग सावित्री की कहानी जानते ही होंगे । मैं नहीं समझता कि उस कहानी को सुनाने की आवश्यकता है ।'' देवनाथ ने कहा ।

''नहीं दादाजी, हममें से बहुत से बच्चे यह कहानी नहीं जानते । उस काव्य के बारे में हमें कोई जानकारी नहीं'' बच्चों ने कहा ।

''तो वह कहानी तुम्हें मैं ज़रूर बताऊँगा । परन्तु आज नहीं, फिर कभी । अब जाओ और पढ़ो ।'' कहते हुए देवनाथ खड़े हो गए ।

अंगरक्षक

बहुत पहले की बात है। शिवगिरि देश के शासक वीरभद्र को एक अंगरक्षक की आवश्यकता आन पड़ी। उस पद के लिए युद्ध-विद्याओं में दक्ष कितने ही युवक आये। राजा चाहते थे कि उनके कौशलों की अच्छी तरह से परीक्षा हो। परीक्षा का भार उन्होने अपने मंत्री को सौंप दिया।

मंत्री ने बड़ी ही सावधानी से उन सबकी परीक्षा ली और अंततः गजसेन व उग्रशक्ति नामक दो युवकों को इस पद के लिए चुना। परंतु राजा को एक ही अंगरक्षक चाहिये था। मंत्री निर्णय नहीं कर पाया कि इन दोनों में से किसे राजा का अंगरक्षक बनाया जाय?

उसने राजा से स्वयं उन दोनों के बारे में बताते हुए कहा ''प्रभु, गजसेन और उग्रशक्ति दोनों पराक्रमी हैं। सभी विद्याओं में दोनों समान हैं। अंगरक्षक बनने की दोनों में समान योग्यता है। मैं निर्णय नहीं कर पा रहा हूँ कि इन दोनों में से किसे अंगरक्षक पद के लिए चुना जाए? आप ही को निर्णय लेना होगा कि इन दोनों में से कौन अपका अंगरक्षक बने।''

''ठीक है, इस विषय में मैं ही निर्णय लूँगा। परंतु अब शेष युवकों का क्या होगा, जो इस पद की आशा में आये? क्या वे आपकी दृष्टि में किसी भी काम के योग्य नहीं?'' महाराज ने पूछा।

''वे भी बहादुर और योग्य युवक हैं। सब के सब सेना में काम करने योग्य हैं। उनमें से कुछ युवकों को दलनायक के पद पर नियुक्त कर सकते हैं। कुछ और युवकों को प्रशिक्षण देने के उपरांत ही सेना में भर्ती कर सकते हैं।'' मंत्री ने अपनी राय बतायी।

''ठीक है, यह काम आप खुद संभालिये, मैं कल पर्वतांचल में स्थित उद्यानवन जाने के लिए निकल रहा हूँ। जिस गजसेन व उग्रशक्ति की आप बात कर रहे थे, उनमें से किसी एक को मेरा

अशोक साहनी

अंगरक्षक बनकर मेरे साथ चलने को कहिये!'' राजा ने आदेश दिया ।

दूसरे दिन सूर्योदय के पहले ही महाराज और उग्रशक्ति दोनों घोडों पर बैठकर उद्यानवन पहुँचने के लिए निकल पड़े । उग्रशक्ति के कमर में तलवार थी, कंधे पर धनुष-बाण लटक रहे थे और उसके हाथ में भाला था । देखने में वह सौ प्रतिशत अंगरक्षक लगता था ।

दुपहर होते-होते वे उद्यानवन पहुँचे । वहाँ पहुँचने के बाद जब राजा कुटीर में विश्राम कर रहे थे, तब कुछ ग्रामीण दौड़े-दौड़े वहाँ आये । उन्होने दीन स्वर में राजा से कहा ''महाराज, हम बड़ी ही विपत्ति में फँस गये हैं । एक बाघ हमारे गाँव में घुस आया है। वह बकरियों, भेडों व अनेक और पशुओं को खाता जा रहा है । इससे हमारा जीना दूभर हो गया है । किसी भी क्षण वह हम पर भी आक्रमण कर सकता है और हमें खा सकता है । भयभ्रांत हम दरवाज़े बंद करके रह रहे हैं । मालूम नहीं; वह बाघ हमें कब खा जाए । उससे बचकर हम किसी तरह से यहाँ आ पहुँचे, आप ही हमारी रक्षा कर सकते हैं ।''

राजा ने तुरंत उग्रशक्ति को संबोधित करते हुए आदेश दिया ''उग्रशक्ति, ग्रमीणों के साथ जाओ और उस बाघ को मार डालो ।''

''प्रभु, आपकी आज्ञा शिरोधार्य है । इस छोटे-से काम के लिए तलवार व धनुष-बाण को साथ ले जाने की कोई आवश्यकता नहीं । यह भाला ही बहुत है । उस बाघ को मारकर अभी लौटता हूँ'' ।

इसके एक घंटे के अंदर ही उग्रशक्ति पुनः लौटा और महाराज से कहने लगा ''प्रभु, मैने बहुत ढूँढा, लेकिन वह बाघ गाँव में कहीं भी दिखायी नहीं पडा । शायद जंगल लौट गया होगा'' ।

राजा सिर्फ़ सिर हिलाकर चुप रह गये । सूर्यास्त तक वे राजधानी लौटे ।

एक सप्ताह के बाद महाराज फिर से उसी उद्यानवन जाने निकले । इस बार वे गजसेन को अपने साथ ले गये । पहले ही की तरह इस बार भी कुछ ग्रामीण रोते-बिलखते आये और महाराज से विनती की कि बाघ से गाँव की रक्षा करें; नहीं तो उन सबका बाघ का शिकार हो जाना निश्चित है ।

राजा ने गजसेन को आज्ञा दी कि वह ग्रामीणों के साथ जाकर बाघ को मार डाले । किन्तु गजसेन वहाँ से न हिला न डुला । वहीं का वहीं खड़ा रह गया ।

राजा ने क्रोध-भरे स्वर में कहा "सुनते नहीं हो? यह राजा की आज्ञा है !"

गजसेन ने विनयपूर्वक कहा "प्रभु, क्षमा चाहता हूँ, मैं यहाँ आपको अकेले नहीं छोड़ सकता। ग्रामीण स्वयं राजधानी जाएँ और मंत्रीजी से बता कर किसी की सहायता लें । मैं आपका अंगरक्षक हूँ। आपकी रक्षा करना मेरा प्रथम कर्तव्य है" ।

"इतने लोगों के सामने मेरा अपमान करने पर तुल गये? जानते हो, मेरी आज्ञा का पालन न करना कितना बड़ा अपराध है ! और इस अपराध के लिए तुम्हें कितनी बड़ी सजा मिलेगी?" राजा ने आगबबूला होते हुए कहा ।

"आपकी आज्ञा का पालन मैं नहीं कर सका, इसके लिए क्षमा चाहता हूँ । मैं केवल आपका अंगरक्षक मात्र हूँ ।" निर्भय होकर गजसेन ने विनयपूर्वक कहा ।

राजा चुप रहे, कुछ नहीं बोले । ग्रामीणों को यह आश्वासन देकर तुरंत निकल पड़े कि राजधानी पहुँचकर इसके लिए आवश्यक प्रबंध करूँगा ।

उसी रात को उन्होने मंत्री को अंतःपुर में बुलवाया और उद्यानबन में जो हुआ, विस्तारपूर्वक बताया । फिर राजा ने मंत्री से कहा कि उग्रसेन के लिए सेना में जो भी पद उचित हो नियुक्त कर दीजिए। गजसेन को मेरे अंगरक्षक के पद पर नियुक्त करें" ।

राजा के निर्णय पर मंत्री ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा "प्रभु, गजसेन ने आपकी आज्ञा को धिक्कारा । नियमों का उल्लंघन किया। फिर भी क्या आप चाहते हैं कि वही अंगरक्षक बने?"

महाराज ने मुस्कान भरते हुए कहा "हाँ, उसने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया । उसे मालूम था कि इसके लिए उसे मौत की सज़ा भी हो सकती है । किन्तु अपने कर्तव्य-पालन में वह अडिग रहा । अंगरक्षक का कर्तव्य है, हर हालत में राजा की रक्षा और यह कर्तव्य उसने अपनी जान पर खेलकर भी निभाया। वही मेरा अंगरक्षक होने के लायक है । उग्रशक्ति साहसी है, परंतु वह बुद्धिमान नहीं ।"

यों गजसेन राजा का अंगरक्षक बना ।

परोपकारी समीर
चन्दामामा प्रस्तुत करते हैं
राक्षस की झंझट
चित्र : पाणी
समीर शेरु को लेकर कांचनपुर नामक गाँव के पास ही के एक पहाड़ी पर पहुँचा । वहाँ जब वह विश्राम कर रहा था तो उसने एक निकट की गुफ़ा के पास एक विचित्र दृश्य देखा ।
एक आदमी एक गधे व एक बकरी को हांकता हुआ आया । गधे की पीठ पर भारी गट्ठर था । आदमी ने उन्हें गुफा के भीतर हाँक दिया । और बाहर खड़ा हो गया ।
यह जानने के लिए कि भीतर क्या हो रहा है? समीर उस आदमी के पास गया ।
क्या कोई गुफा में रहता है? क्या तुम उसकी प्रतीक्षा कर रहे हो? गधे पर क्या रखा था? क्या खाना?
ओह... यह तो प्रतिदिन की दिनचर्या है । पता नहीं यह गाँव इस श्राप से कब मुक्त होगा ।
क्या मतलब? मुझे बताओ, हो सकता है मैं कुछ कर सकूँ !
यह बहुत आसान काम नहीं है । क्या तुम उस राक्षस को यहाँ से भगा सकते हो? जो हमें काफी दिनों से धमका रहा है? और वह बहुत दिनों से यहाँ पर है ।

उसी के कारण गाँववाले
अपना गाँव छोड़कर कहीं और चले गए । एक
बर्ष बाद वे पुनः आए । शीघ्र ही उनकी भेड़ें और
बकरियाँ फिर से अचानक गायब होने लगीं । एक दिन
तांत्रिक मंगल के सहचरों ने यहाँ एक
भीमकाय राक्षस को
देखा । मंगल गया
और उससे बातें भी की ।
राक्षस ने कहा कि गाँव
वाले उसके लिए रोज
एक बकरी और बहुत सारा खाना भेजेंगे । नहीं तो वह गाँव वालों को बहुत तंग
करेगा । मंगल ने एक बैठक बुलाई ।

एक दिन तांत्रिक का परिवार गाँव से बाहर गया और लौट कर नहीं आया । लोगों ने समझाया कि राक्षस ने उन्हें मार डाला ।
यह नहीं जानता कि उसके जैसे राक्षस मेरी उँगली के इशारे पर नाचते हैं । मुझे धमकी दे रहा है । मैं उसे सबक सिखाऊँगा ।
गाँव वाले भी तांत्रिक और सहयोगियों के साथ गुफा में गए। परन्तु वापस नहीं आए ।
अब गाँव वालों को कोई संदेह नहीं है कि राक्षस ने उन्हें भी मार डाला । उसके बाद उसकी आवाज़ आयी और यह आहार प्रतिदिन उसे भेजना पड़ता है ।
यह सारा कुछ बड़ा ही रहस्यमय है । हो सकता है कि मंगल और उसके साथी गुफा में रह रहे हों । और गांववालों द्वारा दिए गए भोजन का आनन्द उठा रहे हों ।
अच्छा तो लोग इस बात से डरे हुए है कि मंगल और उसके परिवार को राक्षस खा गया । क्या किसी ने उसे देखा है अभी तक ?
नहीं! लेकिन हम लोग उस समझौते में बंधे हुए हैं और रोज बकरी और भोजन भेजना पड़ता है ।
समीर ने एक योजना बनाई ।

उसी रात को समीर, शेरू को लेकर गुफा के द्वार तक गया । उसने गुफा से आने वाली आवाजों को सुनने की कोशिश की । उसे कुछ अस्पष्ट बातें सुनाई दीं ।

वह चुपके से गुफा के भीतर चला गया । जिससे कि कुछ स्पष्ट देख और सुन सके । उसने भीतर बैठे कुछ लोगों को खाते हुए देखा । उसमें से कुछ राक्षस जैसे लग रहे थे ।

दूसरे दिन सुबह ....
मैंने पिछली रात को गुफा में कुछ लोगों को एक साथ देखा । परन्तु वहाँ कोई राक्षस नहीं था ।
चलो हम अपने आप देखें ।

समीर के कहे अनुसार गाँव वालों ने गुफा के द्वार पर सूखी लकड़ियाँ रखकर आग लगा दी ।

जैसे ही धुआँ गुफा में फैल गया, मंगल, उसका परिवार और उसके सहयोगी गुफा से बाहर आ गए । उन्हें देखकर गाँव वाले चकित रह गए । मंगल और उसके साथी यह जानने के बाद कि उनकी योजना असफल हो गयी है वे वहाँ से कहीं भाग गए ।
धन्यवाद अजनबी व्यक्ति ! तुमने हमें एक बहुत बड़े राक्षस से मुक्ति दिलाई और उसे भगा दिया ।

अब कहाँ चला जाए शेरू?
गाँव वालों से विदा लेकर समीर कांचनपुर से आगे बढ़ा ।
अगले माह ... एक नयी कहानी ।

मृत्युञ्जय

बहुत समय पहले की बात है । अवंती नगर में रामनाथ नामक एक व्यापारी रहा करता था। लोग कहते कि वह बहुत ही सच्चा और ईमानदार व्यक्ति है। एक दिन अकस्मात् रामनाथ का निधन हो गया । जिससे व्यापार का सारा कार्य-भार उसके पुत्र मनोहर पर आ पड़ा ।

रामनाथ के मरणोपरांत उसके द्वारा लिए गए उधार धन का रहस्य खुला । मनोहर को जब यह पता चला कि पिता की सम्पत्ति से अधिक उसके ऋण की राशि है तो वह हतप्रभ रह गया। एक तो आयु में बहुत कम और दूसरे व्यापार में बिल्कुल अनभिज्ञ । फिर भी उसने साहस पूर्वक कार्य करके ऋण की कुछ राशि चुकता कर दी और व्यापार को चलाता रहा । किन्तु भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया और उसे व्यापार में भारी हानि उठानी पड़ी ।

ऋण चुकाने के लिए उस पर दबाव डाला जाने लगा। मनोहर को अपने दुर्भाग्य पर बड़ा दुःख हुआ । इस परिस्थिति में वह ऐसा घिर गया कि आत्महत्या के अतिरिक्त उसके पास और कोई मार्ग नहीं था । उसने निर्णय कर लिया कि जंगल में जाकर वह बाघ का आहार बन जाएगा । जिससे उसे इस ऋण की समस्या से मुक्ति मिल जाएगी । इसी ध्येय से वह जंगल की ओर जाने लगा ।

जब वह जंगल की एक पगडंडी से जा रहा था तो उसने बाघ की दहाड़ सुनी । क्षणभर के लिए वह भयभीत हो गया । परन्तु पुनः साहस कर वह उसी रास्ते पर चलने लगा । चलते-चलते उसने देखा कि वह बाघ अब पेड़ों के

महेश कुमार

मनोहर ने विरक्ति भरे स्वर में कहा "मैं भाग्यवान नहीं हूँ, मेरे भाई ! मैं तो बहुत ही अभागा इनसान हूँ । जंगल में इसी बाघ का शिकार बनने आया था ।"

विचित्रता भरी आंखों से देखते हुए भील युवक ने कहा "मृत्यु को गले लगाने के लिए तुम बन में चले आए? मैं चाहूँ तो तुम्हें अभी बाँण चलाकर मृत्यु के घाट उतार सकता हूँ । परन्तु यह तो हत्या है । उसके लिए सैनिक मुझे बंदी बना लेंगे ।"

फिर कुछ सोचने के पश्चात् उसने कहा "देखो उस पहाड़ की चोटी पर चढ़कर वहाँ से कूद जाओ, तुम्हारी इच्छा आसानी से पूरी हो जाएगी ।" कहकर वह छटपटाते हुए बाघ के पास चला गया ।

पीछे से निकलकर उसके सामने आ गया और धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ रहा है। मनोहर आँखे बंद करके वहीं खड़ा हो गया और बाघ के प्रहार की प्रतीक्षा करने लगा । परन्तु ऐसा नहीं हुआ । बल्कि बाघ के धड़ाम से जमीन पर गिरने की आवाज सुनाई दी ।

मनोहर ने चकित होते हुए जब अपनी आँखे खोली तो देखा बाघ छटपटा रहा था । उसकी छाती में बाँण लगा हुआ था और रक्त बह रहा था । उसने अपने चारों ओर देखा । इतने में एक धनुर्धारी भील युवक दौड़ता हुआ उसके पास आया और बोला "बड़े भाग्यवान हो ! इस बाघ ने तो अब तक न जाने कितने मनुष्यों का रक्त चखा है । प्रात:काल से इसी के मार डालने के जुगाड़ में लगा हुआ हूँ ।

मनोहर को भील की सलाह सही लगी और वह पहाड़ पर चढ़ने लगा । वह चोटी पर पहुँचने ही वाला था कि उसने देखा कि दो पहाड़ी भेड़ आपस में भिड़ रहे थे । मनोहर उन्हें देखते हुए खड़ा रह गया । इतने में एक बड़ा पत्थर उसकी ओर लुढ़कता हुआ आने लगा । वह डरकर वहाँ से हट गया । परन्तु पत्थर उसके पाँवों को छीलता हुआ दूसरी ओर जा गिरा । पाँव में काफी गहरी चोट लगने के कारण वह दर्द से कराहने लगा । उस पीड़ा के कारण वह पहाड़ की चोटी तक नहीं पहुँच सका ।

वह सोच रहा था कि लुढ़कते हुए पथ्थर के नीचे उसे आ जाना चाहिए था । परन्तु डर के मारे हट जाने से उसकी मौत एक बार पुनः टल गयी । जिससे वह फिर दु:खी हो गया । मनोहर

ने सोचा कि व्यापार के बारे में ही नहीं बल्कि मृत्यु के बारे में भी दुर्भाग्य उसका पीछा नहीं छोड़ रहा है । यह सोचते हुए उसकी आँखो में आँसू भर आए ।

फिर भी उसने मृत्यु के बारे में अपना निर्णय नहीं तोड़ा । अब वह मरने के लिए किसी नई युक्ति के बारे मे सोच रहा था । उसे साँप का एक बील दिखाई दिया । बिना-सोचे विचारे तुरंत उसने अपना हाथ उस बील में डाल दिया। उसे आशा थी कि भीतर विश्राम करता हुआ साँप क्रोधित होकर उसे डँस लेगा और वह मर जाएगा ।

परन्तु वहाँ भी वह मौत से बच गया । क्योंकि उस समय साँप वहाँ था ही नहीं । उसने खीज कर बील में जल्दी-जल्दी टटोलना आरम्भ किया । उसे वहाँ एक अँगूठी मिली ।

अपनी दशा पर दु:खी होते हुए वह वहाँ से निकल पड़ा । अब उसने वह अँगूठी अपनी ऊँगली में पहन ली । उधर से जाते हुए राजा के दो सैनिकों ने वह अँगूठी देख ली और वहीं रुक गए। उन्होने मोहन से पूछा कि "तुम्हें यह अंगूठी कहाँ मिली?" मोहन ने उन्हें सारा किस्सा कह सुनाया । परन्तु सैनिकों को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ । वे लोग सोच रहे थे कि मोहन सब मनगढ़न्त कहानी सुना रहा है ।

वास्तव में यह मुद्रिका अवंती के महाराज कीर्तिचन्द्र की राज मुद्रिका थी । एक बार उनके अन्त:पुर में चोरी हुई और उस चोरी के माल में यह मुद्रिका भी चली गई । परन्तु राजा ने अपने मान सम्मान को ध्यान में रखते हुए इस चोरी के बारें में कुछ नहीं बताया । उसे भय था कि लोगों का उसपर से विश्वास उठ जाएगा । लोग सोचेंगे कि जो राजा राजभवन की रक्षा नहीं कर सकता वह प्रजा की क्या रक्षा करेगा ! परन्तु राजा गुप्त रूप से चोरों का पता लगवाने लगा ।

अंत:पुर में प्रवेश कर जिसने भी चोरी की

वह राजमुद्रिका के पहचाने जाने के भय से अंगूठी साँप के बिल में डालकर चला गया ।

फिर भी सैनिकों ने मनोहर को जबरदस्ती राजभवन ले आकर राजा कीर्तिचन्द्र के समक्ष खडा कर दिया । महाराज ने मनोहर को ऊपर से नीचे तक गौर से देखा और फिर उसे सत्य बताने को कहा ।

मनोहर ने कहा ''महाराज! मैं इस संसार का सबसे बड़ा अभागा मनुष्य हूँ । अपने व्यापारी पिता के ऋण को चुकाने के लिए व्यापार किया तो उसमें घाटा उठाया । बाघ का शिकार बन जंगल में मरने गया तो किसी ने आकर बाघ को मार डाला । पहाड़ की चोटी से कूदकर आत्महत्या करनी चाही तो, एक पत्थर मेरे पैर को घायल कर के लुढ़कता हुआ नीचे गिर गया और मैं पहाड़ पर चढ ही नहीं पाया । वहाँ भी मौत ने मुझे अपने आलिंगन में नहीं लिया । अंततः साँप के बील में हाथ डालकर मरना चाहा तो, वहाँ साँप के स्थान पर यह अंगूठी मिल गई । और इसी ने मुझे अपराधी बनाकर यहाँ खड़ा कर दिया ।

महाराज ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा ''मरने के लिए तुमने इतने प्रयत्न किए! फिर भी बच गए, विश्वास नहीं होता !''

''महाराज मेरी बात का विश्वास कीजिए, मुझे डर लगता है कि मौत ही मुझसे भाग रही है । मेरे साथ आँख निचौली का खेल खेल रही है । इतने प्रयत्न के बाद भी मौत मेरे भाग्य में नहीं । आपको मेरी बातों का विश्वास न हो तो स्वयं देख लीजिए । यह कहकर वह अन्तःपुर से नीचे कूद गया।

राजा को लगा कि इस बार मनोहर अवश्य मर गया होगा । मन ही मन वह दुःखी होते हुए खिड़की से नीचे देखने लगा । नीचे का दृश्य देखकर राजा चकित सा रह गया ।

वास्तव में जब मनोहर नीचे गिरा तो उस समय एक घुड़सवार सैनिक वहाँ से जा रहा था, मनोहर वह उसी घोड़े पर गिर पड़ा । परन्तु दोनों ही घोड़े से नीचे गिरे और मनोहर को कुछ नहीं हुआ, परन्तु सैनिक की कमर टूट गई ।

मनोहर ने उठकर धूल पोंछली और खिड़की से नीचे देख रहे महाराज को सम्बोधित करके बोला - ''महाराज अब तो आप मेरी बातों का विश्वास कीजिए !''

जिस सैनिक की कमर टूटी थी, उसकी

चिकित्सा वैद्य कर रहे थे । उसके कपड़ों में छुपाया हुआ एक पत्र मिला । जिसमें राज्य के सैनिक प्रबंध तथा कीर्तिचन्द्र के बारे में सभी गोपनीय सूचनाएँ थी ।

इस पत्र को पढ़ने के बाद कीर्तिचन्द्र समझ गया कि यह कार्य उसकी सेना के ही किसी आदमी का है । सम्भवतः किसी उच्च अधिकारी ने ही यह कार्य किया होगा । इसका यह अर्थ हुआ कि उसके विरुद्ध कोई षडयंत्र रचा जा रहा है । विक्रमसिंह उसके देश पर आक्रमण करने की योजना बना रहा है । इस कार्य में उसके अपने सेनाधिकारी भी सम्मिलित हैं । और यह सेनाधिकारी विक्रमसिंह का गुप्तचर है ।

घायल सैनिक से जब यह पूछा गया तो उसने स्वीकार कर लिया कि वह विक्रमसिंह का गुप्तचर है ।

कीर्चिचन्द्र को यह समझते हुए देर न लगी कि यदि यह विवरण शत्रु राजा को मिल जाता तो वह अवश्य हम पर चढ़ाई कर हमें पराजित कर देता । परन्तु मनोहर के कारण आज यह रहस्य खुल गया । उसी कारण राज्य की बाल-बाल रक्षा हुई । इसलिए राजा ने मनोहर को एक लाख अशर्फियाँ देते हुए कहा "जाओ इस धन से व्यापार करो । और अपना कर्ज चुकाओ । आज से दुर्भाग्य तुम्हारा पीछा नहीं करेगा। और सौभाग्य सदा तुम्हारे साथ रहेगा ।"

वास्तव में उस दिन के बाद दुर्भाग्य की परछाई भी मनोहर पर नहीं पड़ी । वह उत्तरोत्तर प्रगति करता गया ।

महाराज कीर्तिचन्द्र मनोहर की प्रगति से बहुत प्रसन्न होते और सदा उसका उत्साहवर्धन करते थे । कीर्तिचन्द्र के राज्य की रक्षा का कारण बना मनोहर ने राजा के हृदय में स्नेह स्थान पा लिया। राजा ने एक दिन उसे समझते हुए कहा "मृत्यु हमारे वश में नहीं है । जीवन की समस्या से जूझकर जो जीवन जीता है, वही सच्चा मनुष्य है ।"

महाराज के धन से उसने मात्र ऋण ही नहीं चुकाया बल्कि व्यापार भी किया । लोग उसके पिता की भाँति उसे भी इमानदार व्यापारी कहने लगे।

वर योग्य है या नहीं?

रामापुर ज़मींदार की कचहरी में बलराम कोषाधिकारी था । सुनंदा उसकी इकलौती बेटी थी । माँ के मर जाने की वजह से उसने उसे बड़े लाड-प्यार से पाला-पोसा । जब वह विवाह योग्य आयु की हो गयी तो उसके लिए योग्य वर ढूँढने में वह लग गया । उसका विचार था कि कचहरी में ही काम करनेवाला कोई योग्य युवक मिल जाए तो अच्छा होगा । ऐसा करने से वह भी उसी के साथ-साथ रहेगी।

कचहरी में उसी के अधीन काम कर रहे, नागराज और सारंग नामक दो युवक थे। दोनों देखने में सुंदर और अपने-अपने फ़र्ज़ अच्छी तरह निभाते भी थे । अंतर था, तो मात्र उनके स्वभावों में ।

नागराज मिलनसार था । सबके साथ वह मिल-जुलकर रहता था और हंसी-मज़ाक भी किया करता था । परंतु औरों का कहना है कि वह अपनी आमदनी में से एक पैसा भी बचाता नहीं है । जब देखो, दोस्तों के साथ घूमता-फिरता है और बिना सोचे-विचारे व्यर्थ ही खर्च करता रहता है ।

किन्तु सारंग का स्वभाव इसके बिल्कुल विरुद्ध था । ज़रूरत पड़ने पर ही वह किसी दूसरे से बातें करता था । बहुत से लोगों का दावा था कि वह पाई-पाई बचाता है और अब उसके पास बहुत-सा धन जमा भी है । कुछ लोग उससे चिढ़ते थे, क्योंकि उनकी नज़र में वह अव्वल दर्जे का कंजूस था । और कुछ लोग यह कहकर उसकी प्रशंसा के पुल बांधते थे कि अभी से होनेवाली पत्नी को सुखी रखने के लिए धन को सुरक्षित रख रहा है ।

एक दिन बलराम ने कचहरी से आते ही बेटी सुनंदा से उसकी शादी का जिक्र किया और साथ ही उन दोनों युवकों के बारे में सविस्तार बताया।

फिर उसने उससे कहा ''ज़मींदार के जन्मोत्सव पर अंतःपुरमें तुमने उन दोनों को देखा था । अब तुम्हें बताना होगा कि इन दोनों में तुम्हें कौन अच्छा लगा । बाकी बातें मैं देख लूँगा ।''

थोड़ी देर तक सोचने के बाद उसने कहा ''पिताजी, मैं नागराज से शादी करूँगी ।''

उसके इस जवाब से चकित बलराम ने कहा ''बेटी, यह क्या कह रही हो? सबका कहना है कि वह बहुत ही फिजूल खर्ची है, अपने वेतन में से एक पाई भी नहीं बचाता, किफ़ायतमंदी से कोसों दूर है । ऐसा आदमी भला अपनी पत्नी और बच्चों की देखभाल कैसे करेगा? अपने परिवार को कैसे संभाल पायेगा?''

सुनंदा ने तुरंत कहा ''अब नागराज का अपना कोई नहीं है, इसलिए बिनासंकोच खर्च कर रहा है। पर जब शादी हो जाए, उसका अपना कोई आ जाए तो भला खर्च क्योंकर करेगा? अपनी इस आदत को थोड़े ही बरक़रार रखेगा? हो सकता है, शादी के बाद उसकी यह आदत छूट जाए, पत्नी को वह बहुत चाहे और खर्च कम कर दे । तब आप ही आप किफ़ायती हो जायेगा । अब रही सारंग की बात । मुझे लगता है कि वह महा कंजूस है । आवश्यकता से अधिक किफ़ायत कंजूसी का सबूत है । ऐसा आदमी न ही अपने को सुखी रख सकता है, न ही अपनों को ।''

''उनके बारे में तुम्हारा अंदाज़ा अगर ग़लत निकले तो?'' बलराम ने पूछा । सुनंदा सोच में पड़ गयी । फिर बोली ''पिताजी, तब एक काम कीजिये। नागराज और सारंग की परीक्षा लेंगे तो दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा । इससे किसी निर्णय पर आने में हमें सुविधा होगी। उस परीक्षा में जिसकी जीत होगी, उससे मैं विवाह

करूँगी ।''

दूसरे दिन कचहरी में बैठे बलराम से नागराज ने पूछा ''क्या बात है बलरामजी, लगता है, आप बहुत परेशान हैं । मैंने आज तक आपको इस हालत में नहीं देखा । क्या कोई ख़ास बात है? घर जाने का समय हो गया, फिर भी आप अब भी यहीं बैठे हैं?'' उसे क्या मालूम था कि बलराम परेशान होने का नाटक कर रहा है ।

बलराम ने भर्राये हुए स्वर में कहा ''क्या बताऊँ नागराज, मेरी बेटी की शादी के लिए एक रिश्ता आया है । उनका हठ है कि दस हज़ार रुपये तुरंत देने पर ही यह शादी पक्की मानी जायेगी । मेरे पास अब इतने रुपये नहीं हैं । समझ में नहीं आता कि क्या करूँ । कैसे इस समस्या का हल ढूँढूँ?''

बलराम की इस परेशानी को जानकर आश्चर्य में डूबे नागराज ने कहा ''कैसी विडंबना है! यह

तो मीठा खाने के लिए भी मेहनताना देने की बात हो गयी। सुँदरता में, अक़्लमंदी में आपकी बेटी किसी से कम नहीं है। वह तो अनमोल रत्न है। उसे पत्नी के रूप में पाना ही सौभाग्य है। इस भाग्य को ठुकराना सरासर मूर्खता है। अब रही रक़म की बात तो मुझे चार दिनों का समय दीजिये। मैं रुपयों का इंतज़ाम कर दूँगा।''

''जितना वेतन पाते हो, पूरा का पूरा खर्च कर देते हो। एक पाई भी नहीं बचाते। इतनी बड़ी रक़म कहाँ से लाओगे?'' बलराम ने पूछा।

नागराज ने मुस्कुराते हुए कहा ''कितने ही अमीर मेरे अच्छे दोस्त हैं। मैंने आड़े वक्त पर किनती ही बार उनकी मदद की। क्या वे इतनी भी मेरी मदद नहीं करेंगे?'' उसकी बातों में आत्म विश्वास भरा हुआ था।

बलराम वहाँ से निकलकर सारंग से मिलने गया। उससे पैसों की ज़रूरत के बारे में सविस्तार बताया और कहा ''मैं जानता हूँ कि तुम बड़े ही मितव्ययी हो। इस आशा को लेकर आया हूँ कि ऐसे वक्त पर तुम ज़रूर मेरी मदद करोगे। दस हज़ार रुपयों का इंतज़ाम कर दोगों तो महीने के अंत तक ज़रूर लौटा दूँगा।''

उन बातों को सुनकर सारंग का चेहरा विवर्ण हो गया। सकपकाते हुए उसने कहा ''बुरा न मानियेगा। कर्ज़ देने की मेरी आदत नहीं है। वह मेरे स्वभाव के विरुद्ध है। आप अपनी बेटी की शादी कुछ दिनों के लिए क्यों नहीं टालते? जब आपके पास रक़म हो, तभी शादी रचाइयेगा। तीन महीनों के बाद दहेज की वह रक़म मुझे देंगे तो मैं खुद आपकी बेटी से शादी करूँगा।''

बलराम उसकी बातों पर नाराज़ हुआ, पर कुछ बोले बिना वहाँ से चल पड़ा। उसने घर आकर जो हुआ, सब कुछ बेटी को बता दिया।

''पिताजी, आप समझ गये न कि क्या सत्य है? उन दोनों में से कौन खरा है और कौन खोटा? किसमें आपका दामाद बनने की योग्यता है?'' सुनंदा ने पूछा।

''छोटी हो, लेकिन हो बड़ी ही अक़्लमंद। आदमियों को परखने में माहिर हो। जीत तुम्हारी ही हुई'' बलराम ने प्रसन्नता-भरे स्वर में कहा।

इसके बाद एक महीने के अंदर ही सुनंदा व नागराज का विवाह वैभवपूर्वक संपन्न हुआ।

महाभारत

युद्ध का सातवाँ दिन था । भीष्म ने कौरव सेना को मण्डल-व्यूह में खडा किया । धृतराष्ट्र के पुत्र कई हज़ार रथों और गजसेना के साथ भीष्म के रक्षक बनकर खड़े हो गये ।

कौरवों की व्यूह रचना को देखकर युधिष्ठिर ने वज्र-व्यूह में अपनी सेनाओं को नियुक्त किया। युद्ध का प्रारंभ होते ही योद्धा के व्यूह को दूसरे भेदने लगे । द्रोण ने विराट के साथ, अश्वत्थामा ने शिखण्डी से, दुर्योधन ने धृष्टद्युम्न के साथ, नकुल और सहदेव ने अपने मामा शल्य से, विंदानुविंद ने ऐरावंत से, अनेक कौरव वीरों ने, अर्जुन, भीम, कृतवर्मा के साथ, अभिमन्यु ने धृतराष्ट्र के पुत्र चित्रसेन, विकर्ण, दुर्मर्षणों के साथ, घटोत्कच ने भगदत्त से, अलंबुस ने सात्यकी के साथ, भूरिश्रव ने धृष्टकेतु से तथा युधिष्टिर ने श्रुतायु के साथ युद्ध किये।

अर्जुन के साथ युद्ध करनेवाले वीरों ने उस पर बाणों की वर्षा की । अर्जुन ने क्रुद्ध होकर उन पर ऐंद्रास्त्र का प्रयोग किया जिस से उसके साथ युद्ध करनेवाले सभी वीर घायल हो गये । उसके बाण शत्रुसेना में सर्वत्र गिरते जा रहे थे, इससे परेशान हो सभी कौरव वीर भीष्म की शरण में गये ।

इस प्रकार भागकर आनेवालों में सुशर्मा मुख्य था । दुर्योधन ने सुशर्मा को प्रेरित करते हुए कहा - "भीष्म पितामह अर्जुन के साथ जान

लड़ाकर युद्ध कर रहे हैं, तुम सब लोग उनकी सहायता के लिए जाओ।''

अर्जुन के साथ युद्ध कर रहे भीष्म की सहायता हेतु अनेक कौरव वीर आ गए ।

इस बीच में विराट के साथ युद्ध करने वाले द्रोण ने पहले विराट के सारथी तथा उनके घोड़ों को मार डाला, इसके बाद विराट अपने पुत्र शंख के रथ पर सवार हो युद्ध करने लगा । तब द्रोण ने एक ही बाण से शंख को मार डाला, इसे देख विराट युद्ध-क्षेत्र से भाग गया ।

इसी प्रकार शिखण्डी के साथ युद्ध करते अश्वत्थामा ने शिखण्डी के सारथी तथा उसके घोड़ों को मार डाला । तब शिखण्डी तलवार लेकर बड़ी कुशलता के साथ अपने ऊपर प्रयोग किये जानेवाले बाणों को ध्वस्त करने लगा । आख़िर शिखण्डी के हाथ की तलवार टूट गयी, तब उसने टूटी हुई तलवार को अश्वत्थामा पर फेंक दिया और बचकर भाग निकला ।

उधर अलंबुस के साथ सात्यकी ने अद्‌भुत ढंग से युद्ध किया । राक्षस अलंबुस ने माया युद्ध शुरू किया ! इस पर सात्यकी ने अर्जुन के द्वारा प्राप्त ऐंद्रास्त्र का प्रयोग किया । तब अलंबुस बुरी तरह से घायल हो भाग गया ।

धृष्टद्युम्न ने दुर्योधन के साथ युद्ध करते हुए उसे बाणों की वर्षा में डुबो दिया । इसके बाद दुर्योधन को घायल कर उसके घोड़ों को मार डाला । दुर्योधन तलवार लेकर रथ से कूद पड़ा और धृष्टद्युम्न पर हमला कर बैठा । इतने में शकुनि आ पहुँचा और दुर्योधन को अपने रथ पर बिठाकर दूर ले गया ।

कृतवर्मा ने भीम के साथ युद्ध किया । इस युद्ध में उसने भीम को घायल किया और वह भी घायल हुआ । आख़िर अपने घोड़ों को खोकर अपने साले कृषक के रथ पर जा चढ़ा । यह घटना दुर्योधन की आँखों के सामने ही घटी । तब भीम ने कौरव सेना को खूब पछाड़ा।

उलूपी और अर्जुन के द्वारा उत्पन्न व्यक्ति ने विंदानुविंदों के साथ युद्ध करके उनको बाणों से सताया और उनकी सेना को भी भगा दिया ।

घटोत्कच और भगदत्त के बीच विचित्र युद्ध हुआ । भगदत्त ने एक बड़े हाथी पर सवार हो पांडवों की सेना को तितर-बितर कर दिया । अपनी रक्षा करनेवाले व्यक्ति को न पाकर पांडव-सेनाएँ भागने लगीं । घटोत्कच भी अचानक विचित्र ढंग से गायब हो गया । इतने में कौरव

सेना के बीच हाहाकार मच गया । घटोत्कच पुनः दिखाई पड़ा और भगदत्त पर बाणों की वर्षा की । भगदत्त ने घटोत्कच को बाणों तथा तोमरों से सताया, आख़िर घटोत्कच थककर युद्ध भूमि से भाग गया ।

नकुल और सहदेव ने अपने मामा शल्य के साथ युद्ध करके उस महान बीर को बेहोश बनाया। शल्य का सारथी रथ को दूर ले गया । नकुल और सहदेव विजयी हो सिंहनाद कर उठे, इस पर कौरव बहुत ही निराश हुए । तब तक मध्याह्न हो चला था ।

अभिमन्यु तथा धृतराष्ट्र के पुत्रों के बीच जो युद्ध हुआ, उसमें अभिमन्यु ने चित्रसेन, विकर्ण तथा दुर्मर्षणों के रथों को तोड़ डाला । इसे देख कौरव योद्धा अभिमन्यु पर टूट पड़े । तब बड़ी तेजी के साथ अर्जुन अभिमन्यु की सहायता के लिए आ पहुँचे । दोनों पक्षों के बीच भयंकर युद्ध हुआ । अर्जुन के अस्त्रों ने सभी शत्रुओं को बिकल बनाया, सुशर्मा के अनेक सम्बन्धी अर्जुन के हाथों मारे गये । इस पर कुपित हो सुशर्मा कुछ योद्धाओ को साथ ले अर्जुन पर टूट पड़ा। अर्जुन ने उन सब को हरा दिया और भीष्म का सामना करने के लिए आगे बढ़ा । इस बीच उसे दो घड़ियों तक दुर्योधन, सैंधव वगैरह के साथ युद्ध करना पड़ा ।

अर्जुन जब भीष्म के पास पहुँचे, तब तक युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेव भी वहाँ आ पहुँचे । तब पाँचों पांडव एक साथ भीष्म के साथ युद्ध करने लगे ।

सब पांडव मिलकर भी भीष्म को पीड़ित

नहीं कर पाये । इतने में सैंधव ने आकर पांडवों के सभी धनुषों को बेकाम कर दिया । दुर्योधन ने युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव पर बाणों का प्रयोग करके उन्हें सताया । शल्य इत्यादि कौरव दल के योद्धाओं ने भी पांडवों को बुरी तरह से बाणों से मारा ।

इस पर युधिष्ठिर ने शिखण्डी के पास जाकर कहा - "तुमने भीष्म का वध करने की प्रतिज्ञा की । देखते नहीं हो कि भीष्म कैसा दारुण युद्ध कर रहे हैं । मुझे लगता है कि तुम भीष्म को देख घबरा गए । जल्दी जाकर उनका वध करो ।"

ये बातें सुन शिखण्डी रोष में आया और भीष्म के साथ युद्ध करने को खूट पड़ा । रास्ते में शल्य ने शिखण्डी पर अत्यंत भयंकर आग्नेयास्त्र का प्रयोग किया । पर शिखण्डी जरा

भी विचलित नहीं हुआ । उसने इसके बदले में वारुणास्त्र का प्रयोग किया ।

इस बीच भीष्म ने युधिष्ठिर की धनुष और उनकी ध्वजा को भी तोड़कर सिंहनाद किया । युधिष्ठिर एक बार घबरा गये ।

भीम का पौरुष जाग उठा । वह गधा लेकर सैंधव पर टूट पड़ा । सैंधव ने भीम पर बाणों का प्रहार करने लगा, पर भी भीम ने इसकी परवाह किये बिना सैंधव के घोड़ों को गदा से प्रहार करके मार डाला । तब दुर्योधन भीम पर हमला कर बैठा । भीम गदा लेकर उस पर भी टूट पड़ा । उस गदा से बचने के लिए दुर्योधन के सैनिक उसे अकेले छोड़ डरकर भाग गये । इस प्रकार भीम के गदे के प्रहार से बचकर चित्रसेन अपने रथ से कूद पड़ा । उसका रथ ध्वस्त हुआ । वह प्राणों के साथ भाग खड़ा हुआ, तब सबने चित्रसेन का अभिनंदन किया । मौक़ा पाकर धृतराष्ट्र के पुत्र विकर्ण चित्रसेन को अपने रथ पर बिठाकर भाग गया ।

थोड़ी देर बाद शिखण्डी भीष्म के सामने आया और चिल्ला उठा - "ठहर जाओ!" मगर भीष्म ने उसके साथ युद्ध नहीं किया । सूर्यास्त के समय तक धृष्टद्युम्न और सात्यकी ने कौरव सेना को ध्वस्त करना शुरू किया । तब विंदानुविंद ने धृष्टद्युम्न का सामना किया और उसके रथ को तोड़ डाला । वह सात्यकी के रथ पर सवार हो गया ।

उस दिन युद्ध के समाप्त होने के पहले अर्जुन ने सुशर्मा इत्यादि को पराजित किया । भीम ने दुर्योधन वगैरह को हराया । तब जाकर दोनों दलों के योद्धा अपने अपने शिविरों में लौट गये। शिविरों में पहुँचते ही अपने अपने शरीरों में चुभे बाणों को निकलवा कर खूब स्नान किये, युद्ध की चर्चा करना छोड़ थोड़ी देर संगीत के वाद्यों का आनंद लूटने लगे ।

दूसरे दिन फिर से दोनों दलों की सेनाएँ युद्ध के लिए तैयार हो गयीं । व्यूह और प्रति व्यूह की रचना के उपरांत युद्ध के प्रारंभ में ही भीष्म आज रुद्र के समान भयंकर रूप धारण कर गया। इसे देख युधिष्ठिर ने प्रमुख योद्धाओं को भीष्म से लड़ने भेजा ।

भीष्म सोमक, सृंजय तथा पांचालों का वध करने लगा । उसके समक्ष साहस के साथ ठहरकर अकेले भीम ने ही युद्ध किया । वह भी भीष्म के समान भयंकर प्रतीत हो रहा था । उग्र

रूप धारण करके भीष्म के सारथी को मार डाला और उसके रथ को युद्ध भूमि से हट जाने के लिए बाध्य किया । आख़िर भीष्म की सहायता करने वालों में से धृतराष्ट्र के पुत्र सुनाथ का वध कर डाला ।

इस दारुण कृत्य को देख धृतराष्ट्र के सात और पुत्र-आदित्य केतु, बह्वाशी, कुंडधार, महोदर, पंडितक, अपराजित तथा विशालाक्ष-भीम के साथ युद्ध के लिए समृद्ध हो गये । भीम ने उन सातों पर बाणों की वर्षा करके उनको मार डाला ।

इस विभीषिका को देख दुर्योधन के शेष भाई घबरा गये । दुर्योधन दुखी हो भीष्म पितामह के पास जाकर बोला - "दादा जी, मेरे सभी भाइयों का भीम वध कर रहा है । जो साहस करके लड़ रहे हैं, उन सबको भीम मृत्यु के मुँह में भेज रहा है । आप हमारे प्रति विशेष ध्यान नहीं ले रहे हैं । मैं बड़ी उलझन में पड़ा हुआ हूँ।"

दुर्योधन की बातें सुन भीष्म को क्रोध आया। उन्होंने रोनेवाले दुर्योधन से कहा - "क्या यह बात तुम पहले नहीं जानते थे? हम सबने पहले ही तुम्हें सारी बातें समझायीं। तुम्हारे भाइयों में से कोई भी भीम के सामने जाएगा, उनका वध किये बिना भीम नहीं छोड़ेगा! तुमको चाहिए था कि मुझे तथा द्रोण को इस युद्ध में न फँसाते । अब तुम्हीं अपने पराक्रम के बल पर पांडवों का वध करो ।"

दुपहर तक युद्ध अति भयंकर दशा में पहुँचा।

दारुण युद्ध करनेवाले भीष्म पर एक साथ धृष्टद्युम्न, सात्यकी, और शिखण्डी अपनी अपनी सेनाओं के साथ आ पहुँचे । इसी प्रकार विराट, और द्रुपद सोमकों को साथ ले अपनी सेनाओं सहित घटना स्थल पर पहुँचे । साथ ही कैकेय, धृष्टकेतु और कुंतिभोज अपनी अपनी सेनाओं ससेत भीष्म पर टूट पड़े । अर्जुन, उप पांडव और चेकितान ने अन्य कौरव योद्धाओं के साथ युद्ध किया । अभिमन्यु, भीम और घटोत्कच दूसरी ओर से कौरव सेना पर हमला कर बैठे और उनका विनाश करने लगे ।

उधर कौरव योद्धाओं ने इसी प्रकार पांडव सेना का संहार किया । द्रोण ने सोमक तथा संजयों का वध किया । भीम के हाथों से मरनेवाली कौरव सेनाएँ तथा द्रोण के हाथों से

धराशायी होनेवाली पांडव सेनाएँ हाहाकार कर उठीं ।

अति भयंकर रूप से होनेवाले उस संग्राम में अर्जुन का पुत्र ऐरावंत कौरव सेना से जा टकराया।

ऐरावंत की माता नागराज ऐरावत की पुत्री थी। उसके पति को गरुड़ ने मार डाला, इस पर ऐरावत ने उसे अर्जुन के पास भेज दिया । वह अर्जुन पर मोहित हुई और उसके द्वारा ऐरावंत का जन्म हुआ। ऐरावंत नागलोक में ही अपनी माता के पास बढ़ता रहा । मगर उसका चाचा अश्वसेन अर्जुन से द्वेष रखता था, इसलिए अश्वसेन ने ऐरावंत को घर से निकाल दिया ।

उस समय अर्जुन इंद्रलोक में थे । यह समाचार मिलते ही ऐरावंत इंद्रलोक में जाकर अर्जुन से मिला । अपना जन्म वृतांत सुनाया, सभी विद्याओं में अपने ही समान योग्य पुत्र ऐरावंत को देख अर्जुन अत्यंत प्रसन्न हुआ और बोला - "युद्ध के समय तुम्हें हमारी सहायता करनी होगी ।" यह बात स्मरण रखकर ऐरावंत युद्ध में पांडवों की सहायता करने के लिए उत्तम जाति के यवन अश्वों को साथ ले, आ पहुँचा।

ऐरावंत अपनी अश्वसेना के साथ कौरव सेना पर टूट पड़ा । इस पर शकुनि के छोटे भाई गज, गवाक्ष, वृषभ, चर्मवंत, अर्जव और शुक नामक छः योद्धा शकुनि के मना करते रहने पर भी साहस करके ऐरावंत की अश्वसेना के साथ जूझने चल पड़े । वे सब अपने बाणों के द्वारा ऐरावंत को सताने लगे, तब ऐरावंत ने तलवार लेकर अपनी आत्मरक्षा करते हुए वृषभ को छोड़ शेष पांचों योद्धाओं को मार डाला।

इसे देख दुर्योधन ने ऐरावंत से लड़ने के लिए अर्षश्रृंग नामक राक्षस को भेजा । दोनों ने अविराम भीषण युद्ध किया । आख़िर ऐरावंत चोट खाकर बेहोश हो गया । तब उस राक्षस ने तलवार से उसका सिर काट डाला । इसे देख कौरव सेना ने हर्षनाद किया । इस प्रकार पांडव सेना का एक योद्धा मारा गया ।

- क्रमशः

विश्वास

नामधन गाँव का निवासी नामदेव बहुत बुद्धिमान व्यक्ति था । परन्तु बहुत से लोग उसे धोखेबाज मानते थे । उसे अपनी बुद्धिमत्ता पर गर्व होता था । उसका समझना था कि लोग उसे धोखेबाज मानते हैं तो मानें । इससे उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा । लोगों की बातों की उसे कोई परवाह नहीं थी ।

एक बार उसी गाँव का निवासी मनोहर बड़ी विपत्ति में फँस गया । व्यापार में उसे भारी हानि उठानी पड़ी । विवश होकर उसे अपनी जमीन का एक हिस्सा भी बेच देना पड़ा । फिर भी और ऋण बाकी था । मुकुंद को उसे और रुपए देने थे । रूपए देने के लिए वह मनोहर पर जोर डाल रहा था ।

मनोहर और नामदेव बचपन के मित्र थे । वह नामदेव के पास आकर कहने लगा ''तुम बहुत अच्छे आदमी हो । यदि तुम समझाओगे तो मुकुन्द मान जाएगा । दस दिनों में ब्याज सहित मैं उसकी रकम लौटा दूँगा । जैसे भी सम्भव हो मुकुन्द को दस दिनों तक रोको । मैं तब तक उसके धन का प्रबंध कर लूँगा ।''

नामदेव ने कुछ सोचते हुए कहा, ''मुकुन्द धन के विषय में बड़ा ही सख्त आदमी है । इस बारे में वह मेरी बात नहीं मानेगा । परन्तु उसे मुझ पर पूरा विश्वास है । इसलिए यदि मैं यह कहूँ कि वह पैसे दिलवाने का भार मुझपर सौंप दे तो वह अवश्य मान जाएगा । यदि तुमने १० दिनों के भीतर उसका पैसा नहीं लौटाया तो वह सारा पैसा मुझसे लेगा ।

मनोहर ने तत्काल कहा कि ''तुम मेरा विश्वास करो दस दिनों के भीतर ही मैं यह धनराशि किसी भी स्थिति में चुकता कर दूँगा। तुम्हें कोई कष्ट नहीं पहुँचेगा । नामदेव ने कहा ''मुझे तुम पर विश्वास है, परन्तु मुझे यह तो मालूम हो कि तुम्हें मुझ पर कितना विश्वास है? तुम्हारी पत्नी का व्रजों का हार मेरी पत्नी को

बहुत पसंद है । इन दस दिनों तक यह हार तुम १मेरी पत्नी को दे दोगे तो वह बहुत खुश हो जाएगी । यंह मत समझना कि तुम्हारा हार गिरवी पड़ा है । यह तो तुम्हारे विश्वास की परीक्षा है ।''

व्रजों का हार मनोहर की पैतृक सम्पत्ति थी। किसी भी स्थिति में वह उसे बेचेगा नहीं। उस हार की कीमत लगभग एक करोड़ रुपए होगी । उसे उधार में देने के लिए मनोहर को कोई आपत्ति नहीं थी । परन्तु वह नामदेव पर विश्वास नहीं करता था । हार, एक बार उसके हाथ में गया तो वह लौटायेगा नहीं । बल्कि झूठ बोल देगा कि उसने उसे खरीद लिया है ।''

मनोहर कुछ कहे बिना ही वहाँ से चला गया । नामदेव ने शाम को चबूतरे पर बैठकर लोगों से यह बात कही और बताया कि ''हर आदमी को एक दूसरे पर विश्वास करना चाहिए । इसी विश्वास के अभाव में मनोहर जानबूझकर समस्या को निमंत्रण दे रहा है । यदि वह हार मेरे पास रखे तो क्या मैं लौटाऊँगा नहीं?''

यह बात उस गाँव के जौहरी को मालूम हुई। वह एक गहना लेकर नामदेव के घर गया और कहा ''यह गहना गौर से देख लो । यह मनोहर के हार से कुछ कम नहीं है । परन्तु इसका दाम सिर्फ हजार रुपए है । मुझे पैसों की बहुत आवश्यकता है । इसे गिरवी रखकर मुझे सिर्फ सौ रुपए देना । एक ज्योतिषी ने डँका बजाकर मुझसे कहा कि तुम जैसे बुद्धिमान से लिया गया कर्ज मेरे लिए लाभदायक होगा ।

एक माह के भीतर ही मैं यह कर्ज लौटा दूँगा और अपना हार वापस ले जाऊँगा ।''

इस पर नामदेव ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा ''इस गाँव में क्या बुद्धिमानों का अभाव है? इस काम के लिए तुमने मुझ अकेले को ही क्यों चुना?''

''विश्वास को लेकर तुमने चबूतरे पर जो बात कही, वे मुझे बहुत पसंद आयीं । मुझे लगा कि इस गाँव भर में तुम्हारे जैसा विश्वासपात्र हो ही नहीं सकता,'' जौहरी ने कहा ।

नामदेव ने जौहरी को सौ रुपए दिए और गहना रख लिया । एक महीने के बाद जौहरी भूषण, नामदेव के यहाँ गया और कहा ''तुम्हारे रूपए तुम्हें लौटा रहा हूँ । मेरा गहना मुझे लौटा दो ।''

नामदेव ने खिलखिलाकर हंसते हुए कहा ''इसका कोई प्रमाण नहीं है कि तुमने मुझे गहना दिया । तुम तो मेरे बारे में जानते हो, फिर भी तुमने मुझे गहना देने की मूर्खता ही क्यों की? कभी भी किसी का विश्वास न करो अथवा धोखा खाओगे । अपने पैसे अपने पास रखो।''

पर जौहरी भूषण चुप नहीं रहा । गाँव के लोगों को बुलाकर उसने होहल्ला मचाया । नामदेव ने उन सबसे कहा - ''हजार रुपयों का गहना सौ रूपए मात्र देकर मुझसे हड़पने का षड्यन्त्र रचा है इस आदमी ने । कभी आपने ऐसा देखा या सुना है? कोई भी जौहरी बिना किसी सबूत के कभी किसी को गहना देता है?

वहाँ जितने भी लोग थे, सबने जौहरी भूषण को ही अपराधी ठहराया और कहा ''तुम्हारी बातों का विश्वास नहीं किया जा सकता । हमने आज तक नामदेव को ही धोखेबाज समझा। परन्तु तुम तो सबसे बढ़कर हो । आखिर तुमने ऐसा क्यों किया?

जौहरी भूषण ने कहा ''मैंने ऐसा क्यों किया? अभी बताता हूँ । सुनिये एक चोर ने इस गहने की चोरी की और उसे नामदेव को बेचना चाहा। उसने मुझे यह गहना दिखाया और जानना चाहा कि इस गहने की क्या कीमत होगी । मैंने तोलकर बताया कि यह हजार रुपयों का होगा। नामदेव ने चोर से इसे सौ रुपयों में खरीदा । इस घटना के कुछ दिनों बाद राजा के गुप्तचर मेरे पास जाए । उन्होंने ऐसा ही नकली हार मुझे दिखाया और कहा कि ऐसा ही असली हार कोई बेचने आए तो उसकी सूचना उन्हें दे दी जाए। मैं उसी क्षण नामदेव से मिला और कहा कि यह चोरी का माल है इसे राज्य के खजाने में दे दो। परन्तु नामदेव ने मेरी बात अनसुनी कर दी और मुझे धमकाया भी कि अगर तुमने यह रहस्य

किसी से बताया तो तुम्हीं को चोर ठहराऊँगा और जेल भेजूँगा । इसीलिए मैंने सावधानी पूर्वक यह जाल बिछाया और आप सबके सामने कहलवाया कि वह इसी का गहना है ।''

''आप सब साक्षी हैं कि इस गहने से मेरा कोई सरोकार नहीं है । अच्छा हुआ अब मैं मुक्त हो गया ।'' यह कहकर जौहरी वहाँ से चला गया ।

नामदेव हतप्रभ सा देखता रह गया । उसके मुँह से राज की बात नहीं निकली । वह समझ गया कि जौहरी ने बड़ी सावधानी से काम लेकर चोरों का माल उसके सर मढ़ दिया है । पर अब वह कर भी क्या सकता था ?

दूसरे दिन सिपाही उसे कैद करके ले गए । नामदेव साबित नहीं कर पाया कि गहना उसका अपना नहीं है । उसने वह हार अफ़सर को सौंप दिया । और दो सौ रुपयों का जुर्माना भी भर दिया । इस प्रकार वह किसी प्रकार छूट गया।

उसने रास्ते में जौहरी से मिलकर पूछा - ''मैंने तो तुम्हें किसी प्रकार का धोखा नहीं दिया पर तुमने मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया?''

''मैंने भी तुम्हें धोखा नहीं दिया । गहना देकर तुमसे मात्र सौ रुपए ही लिए । हार वापस लेने के लिए भी सौ रुपए लेकर आया । लालच की लपेट में आकर तुमने आपके आपमें धोखा दिया ।'' भूषण ने कहा ।

''तुमने सच कहा मेरी कुटिल बुद्धि ने ही मुझे धोखा दिया ।''

इस पर जौहरी भूषण ने हँसते हुए कहा ''मैं धोखेबाज का सरदार हूँ । अच्छे लोगों के लिए अच्छा हूँ । मैंने मनोहर की सहायता की और मुकुंद के कर्ज के मामले में जिम्मेदारी भी अपने ऊपर लेकर उसके दस दिनों के भीतर ही सारा कर्ज चुका दिया । धोखेबाजों और अच्छे लोगों के प्रति मेरा विश्वास कभी भी गलत साबित नहीं हुआ ।

कुछ कहे बिना नामदेव भिगी बिल्ली की भांति वहाँ से चला गया । इसके बाद कभी भी उसने किसी को भी धोखा देने का प्रयत्न नहीं किया ।

चन्दामामा

'भारत की खोज' प्रश्नोत्तरी

इस अंक में दी गई प्रश्नोत्तरी के उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे। तब तक इनके उत्तर आप स्वयं खोजने की कोशिश करें और भारत की प्राचीन परम्परा के ज्ञान से अपने को समृद्ध करें।

1

१. ए. उत्तर भारत में वह कौन सा धर्मस्थल है जिसका कार्य भार सुदूर दक्षिण भारत के पुजारी सम्भालते हैं?

बि. दक्षिण भारत में वह कौन सा हिन्दु धर्मस्थल है जहाँ एक मुस्लिम श्रद्धालु के सम्मान में कुछ पूजा-पद्धतियाँ स्लाम की भाँति अपनाई गई हैं?

सि. वह कौन-सा मंदिर है जहाँ श्रीकृष्ण भगवान की पूजा उनके बड़े भाई तथा छोटी बहन के साथ की जाती है?

डि. भारत का वह कौन-सा प्रसिद्ध शहर है, जो मुनि भारद्वाज के आश्रम के लिए जाना जाता है?

इ. वह गुफा कहाँ पर स्थित है जहाँ ऋषि वेदव्यास ने महान पौराणिक ग्रन्थ "महाभारत" की रचना की ?

2

राजा के एक मात्र पुत्री ही थी। जो बहुत ही सुन्दर और बहादुर थी। राजा के बहुत सारे शुभचिन्तकों ने राज्य के उत्तराधिकारी के लिए उन्हें एक पुत्र को गोद लेने की सलाह थी। परन्तु राजा को पूरा विश्वास था कि उनकी पुत्री किसी भी वीर और योग्य पुत्र की भाँति ही राज्य का कार्यभार सम्भालेगी।

राजा की मृत्यु के पश्चात राजकुमारी का राज्याभिषेक किया गया। कुछ दिनों शासन करने के पश्चात उसने यह प्रमाणित भी कर दिया कि वह एक कुशल शासन संचालिका है। लेकिन उसके पड़ोसी राज्यों ने उसका राज्य और उसे पाने की लालचाल में विवाह प्रास्ताव भेजना आरम्भ किया। जब हर बार राजकुमारी ने विवाह प्रस्ताव ठुकरा दिया तो इस पर सारे राजा क्रोधित हो उठे और उन्होंने मिलकर उसके राज्य पर चढ़ाई कर दी। राजकुमारी ने बहादुरी के साथ उनका सामना किया और उन्हें पीछे खदेड़ दिया। वह घोड़े पर सवार होकर अपनी तलवार घुमाती और सबको चौंकाती हुई शत्रु के व्यूह में प्रवेश कर गई। चारों ओर से शत्रुओं से घिरी अब वह निर्भय राजकुमारी यह सोचने लगी कि क्या वह हथियार डाल दे अथवा लड़ते-लड़ते जाँन दे दे! अचानक वह एक युवक के समक्ष जाकर रूक गई। जो कि उसका शत्रु नहीं था। परन्तु उसे यह याद था कि यह व्यक्ति एक बार उसके पास विवाह का प्रस्ताव लेकर आया था। उन्होंने शीघ्र विवाह कर लिया। समय-समय पर लोगों में यह धारणा फैल गई कि वह राजकुमारी और कोई नहीं, बल्कि देवी माँ थीं और उसका पति भगवान शिव। भारत में एक प्राचीन मंदिर में उनकी पूजा होने लगी।

वह मंदिर कहाँ है ?

उनका नाम क्या था ? किस देवता और देवी के रूप में उन्हें पूजा गया?

सृजनात्मक स्पर्धाएँ जुलाई

शिष्यों की बड़ी चाह थी कि गुरु की यात्रा के लिए एक घोड़ा खरीदा जाए । वे घोड़ा खरीदने एक हाट में गये । उन्होंने देखा कि घोड़ा बहुत ही क़ीमती है और इतनी बड़ी रकम देकर उसे खरीदना उनके लिए संभव नहीं है, तो उन्होंने एक उपाय सोचा । उन्होंने तत्काल निर्णय कर लिया कि घोड़े का एक अंडा खरीद जाए, जो सस्ते में मिलेगा । गुरु उनके इस अद्भुत निर्णय से बहुत ही प्रभावित हुए और उन्होंने उनकी वाहवाही की । इसके बाद शिष्यों के प्रयत्नों का क्या फल निकला?

पुरस्कार प्राप्त कहानी

महाज्ञानी - महाशिष्य

गुरु की सराहना प्राप्त कर शिष्य अंडा पाने जंगल की ओर गये । उनमें से एक ने चरवाहे को बुलाकर उससे पूछा "घोड़े का अंडा कहाँ मिलता है?" वह खिलखिलाकर हंस पड़ा और कहा "घोड़े का भी कोई अंडा होता है? चलते बनो ।" फिर वे आगे बढ़े तो उन्होंने देखा कि एक साधु ध्यानमग्न होकर वृक्ष के नीचे आसन लगाकर बैठे हुए हैं । उन्होंने उस साधु से भी वही प्रश्न पूछा । साधु ने आँखें खोलकर कहा "आप लोग 'महाज्ञानी' लगते हैं! आप लोग किनके शिष्य हैं?" शिष्यों ने कहा "यह भी कोई कहने की बात है? हम एक 'महाज्ञानी' गुरू के महाशिष्य हैं ।" उनका उत्तर सुनने के बाद साधु ने आखें बंद कर लीं और पुनः ध्यानमग्न हो गये । उन्होंने उनके प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक नहीं समझा ।

थोड़ी दूर और जाने के बाद उन्होंने एक आदमी को देखा, जो एक ठग था । शिष्यों को देखते ही वह भाँप गया कि वे मूर्ख हैं । शिष्यों ने जब घोड़े के अंडे के बारे में पूछा तो उसने कहा "आप लोगों को घोड़े का अंडा ही चाहिये न? अभी ले आता हूँ ।" वह तुरंत पहाड़ के पीछे गया और अंडे के समान का एक सफ़ेद पथ्थर उठा लिया । उस पथ्थर को उसने घिसकर चिकना बनाया । उनसे रकम लेने के बाद उसने कहा "सावधानी बरतना, घोड़े के इस अंडे से किसी भी क्षण घोड़े का बच्चा निकल सकता है । वह बच्चा बड़ा होने के बाद आपको बिठाकर पृथ्वी भर भ्रमण करायेगा ।" कहता हुआ वह वहाँ से रफ़ूचक्कर हो गया ।

चारों शिष्य उस अंडे को लेकर वहाँ से निकले । पर दुर्भाग्यवश वह अंडा जमीन पर गिर गया । झाड़ी में छिपा खरगोश उसकी आवाज़ से डरता हुआ बाहर आया और तेज़ी से दौड़ता हुआ जाने लगा ।" पकड़ो, पकड़ो, भागने न पावे" कहते हुए शिष्य उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगे । देखते-देखते वह खरगोश आँखों से ओझल हो गया । तब उन्होंने वहाँ घास चरते हुए एक गधे को देखा । शिष्य आश्चर्य प्रकट करते हुए कहने लगे, "वाह ! पल भर में कितना बड़ा हो गया, बड़ी ही अच्छी नस्ल का घोड़ा लगता है !"

वे उस गधे को पकड़कर आश्रम में ले आये । उन्होंने उसपर गुरु को बिठाया और नगर भर में घुमाया । उनके इस व्यवहार पर लोग हँस पड़े । कुछ लोग डफ़लियाँ बजाते हुए उनके पीछे-पीछे आने लगे । डफ़लियों की ध्वनि व लोगों की चिल्लाहट से गधा डर गया और गुरु को नीचे गिराकर भाग गया ।

गुरु और शिष्यों की इस अज्ञानता के कारण 'महाज्ञानी' गुरु का यों अपमान हुआ और वे लोगों की हँसी के पात्र बने ।

वी. प्रवीण

कपटी वैद्य

कुम्भी नगर में एक कपटी वैद्य रहा करता था । उसका नाम शिव बैरागी था । वह शेखियाँ मारा करता कि वह एक बहुत बड़ा वैद्य है । कई बार लोग उसकी शेखियों में आ भी जाते और वह उन्हें बहकाकर अपना पेट भरा करता । उसके पास कुछ भस्म, गोलियाँ और रसायन आदि भी थे ।

एक बार उस राज्य के युवराज को एक अजीब बीमारी हुई । उसे न भूख लगती और नहीं प्यास । वह सदा बिस्तर पर पड़ा रहता ।

बहुत प्रयास के बाद भी राज वैद्य उसकी बीमारी का निदान न कर सके । युवराज की अस्वस्थता के कारण राजा को बड़ी चिन्ता हुई । उनकी चिन्ता देखकर, मन्त्रियों और राजकर्मचारियों ने सलाह दी कि शिव बैरागी को बुलाया जाय ।

''छी...छी... वह भी क्या वैद्य है ! जब धन्वन्तरी जैसे राजवैद्य युवराज को ठीक न कर सके, तो भला वह गँवार राख बेचनेवाला क्या ठीक करेगा ...?'' राजा ने कहा ।

''यह कहना उचित न होगा महाराज ! जो बड़े-बड़े वैद्य नहीं कर पाते हैं, वह जंगलों में रहनेवाले जंगली कर दिखाते हैं। कहा जाता है, शिव बैरागी ने कई मरते लोगों को जीवन दिया है । जो बीमारी राजवैद्य न ठीक कर सके, उसे इस तरह के वैद्य ही ठीक कर सकते हैं।'' राजा के कर्मचारियों ने कहा ।

राजा ने कुछ देर सोचकर कहा - ''तो हम ऐसा करें, कुछ ऐसे लोगों की चिकित्सा के लिए इस शिव बैरागी को बुलायें जिनकी बीमारियाँ औरों से न ठीक हुई हों । यदि बैरागी उन लोगों की बीमारियाँ ठीक कर दे तो युवराज की भी उससे चिकित्सा करवायेंगे । नहीं तो उस कपटी वैद्य का सिर कटवाकर किले की द्वार पर लटका दिया जाएगा ।

राजा की यह बात, मन्त्री आदि को

पचीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

युक्तियुक्त लगी । उन्होंने शहर में घूमघाम कर ऐसे कई रोगियों को ढूँढ निकाला, जिनको कुछ ऐसी बीमारियाँ थीं, जो और कोई ठीक न कर पाया था । उन्हें युवराज के कमरे के पासवाले कमरे में रखा गया । फिर राजा ने शिव बैरागी को बुलाकर कहा - ''सुनते हैं तुम कपटी वैद्य हो! अगर तुम सचमुच वैद्यकी नहीं जानते हो, तो तुम्हें दण्ड देना पड़ेगा । क्यों! तुम्हें इस बारे में क्या कहना है?''

''महाराज, मैंने कई बीमारों को ठीक किया है । मेरा इलाज करने का तरीका और दवाइयाँ अलग हैं । जो मुझे नहीं चाहते, वे कहते फिर रहे हैं कि मुझे वैद्यकी नहीं आती है । उनका विश्वास करके मुझे दण्ड देना आपके लिए ठीक नहीं है ।'' शिव बैरागी ने कहा ।

''तो तुम यह सिद्ध करो कि तुम वैद्यकी जानते हो । अन्दर बहुत-से ऐसे रोगी हैं, जो कई दिनों से बीमार हैं । उन सब की बीमारियाँ ठीक करो । अगर उनको तुमने ठीक कर दिया, तो तुम्हें राज वैद्य बनाऊँगा । अगर उनकी बीमारियाँ ठीक न कर पाये, तो तुम्हारा सिर कटवाकर खिले पर लटकवा दूँगा ।'' राजा ने कहा ।

शिव बैरागी के मुख से बात न निकली । सैनिक उसे रोगियों के कमरे में ले गये । कुछ राजकर्मचारी भी उसके साथ थे ।

''मुझे रोगियों से एकान्त में कुछ प्रश्न करने हैं, तुम सब चले जाओ ।'' कहकर शिव बैरागी ने सबको बाहर भेज दिया और अन्दर से किवाड़ बन्द कर लिये । वह यह नहीं जानता था कि

बगल के कमरे में युवराज हैं ।

फिर उस कपटी वैद्य ने उससे कहा - ''मेरे पास एक ऐसा राम बाण लेप है कि तुम सब की बीमारियाँ ठीक हो जायेंगी । मनुष्य का दिल निकालकर, भूनकर, पीसकर उसे कुछ औषधियों में मिलाकर तुम्हारा लेप करना होगा । तीन बार उसे लगाते ही, तुम सब बिल्कुल स्वस्थ्य हो जाओगे । इस औषधी को बनाने के लिए, जो तुम में सब से अधिक बीमार है, उसे मरने के लिए तैयार होना पड़ेगा ।'' यह कहकर उसने एक तपेदिक के बीमार की ओर देखा ।

तपेदिक का रोगी घबरा गया । उसने कहा - ''मै बीमार ही कहाँ हूँ । मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ । मैं न न करता रहा और हमारे लोग मेरा ईलाज करवाते रहे । मुझे कोई बीमारी

नहीं है ... कोई बीमारी नहीं है ।'' कहता वह उठा और वायु की तरह तेज़ दौड़ता हुआ बाहर चला गया ।

उसके जाते ही, उसके पीछे एक और बीमार सरपट दौड़ा । ''मुझे कोई रोग नहीं है, मैं बिलकुल ठीक हूँ ।'' वह भी बाहर चला गया । सब रोगियों को यह कहता देख कि मुझे कोई बीमारी नहीं है, राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ । अश्विनी देवता ही अगर आकर चिकित्सा करते तो इन चार पाँच पुराने बीमारों की बीमारियाँ इतनी जलदी ठीक न होती । यह देखने के लिए कि क्या हुआ था, राजा अपने परिवार के साथ उस कमरे में गया । उन्हें खाली कमरे में केवल शिव बैरागी ही दिखाई दिया । पास के कमरे में से राजा ने युवराज का कहकहा सुना ।

राजा अपने लड़के को, इतने दिनों बाद हँसता हुआ और खुश देख, उसके पास गया -और पूछा, ''क्यों बेटा, तुम्हारी बीमारी ठीक हो गई है? क्यों यूँ हँस रहे हो ?''

''मुझे क्या बीमारी है? मैं तो बिलकुल ठीक हूँ।'' कहता हुआ राजकुमार फिर जोर से हँसा। राजा ने राजकुमार से सारी घटना के बारे में मालूम कर लिया । कपटी वैद्य हथेली में प्राण रखकर सोचने लगा कि उसका सिर कटवा दिया जायेगा।

राजा ने उसके ओर मुड़कर कहा - ''तुम्हें वैद्यकी नहीं आती । फिर भी तुम्हें क्षमा कर देता हूँ । तुम अब वैद्य की करना छोड़ दो और हमारे दरबार में विदूषक का काम करो । युवराज जरा दु:खी रहते हैं, तुम्हारा यह काम है कि तुम उन्हें कभी दु:खी न होने दो । उन्हें हमेशा प्रसन्न रखो ।

अब एक कपटी वैद्य राज्य का विदूषक बन बैठा । उसने यह स्वीकार कर लिया कि उसे वैद्यकी बिल्कुल नहीं आती । उसके पास जो औषधियाँ आदि पड़ी थीं, वे सब घरेलू औषधि के नुस्खे थे । अधिकतर वह अपना ओनोखा नुस्खा प्रयोग में लाता और हँसाकर लोगों को रोगमुक्त कर देता ।

शिव बैरागी विदूषक बन गया और उसने युवराज को कोई बीमारी न होने दी ।

तभी कहा जाता है कि हँसी से बड़ी कोई चिकित्सा नहीं है ।

THE AMUL
CHEESE BOY
IN PICNIC PANIC

One bright sunny day...

...a picnic is in progress.

Little Munnu Verma crawls away.
GURGLE

Suddenly, huge rocks come tumbling down the mountain.
RUMBLE

Amul cheese boy eats an Amul cheese slice...

...and becomes strong and powerful.

He smashes the falling rocks...
BANG

...reducing them to small pieces.
CRACK

Munnu is rescued and back with his family.

All thanks to the cheese that has more milk in it.

Amul cheese slices.
Amul cheese. Yes please!
Amul

Amul

लक्ष्मी पूजा की भिन्न पद्धति

ओड़िसा जो, पहले उत्तकल और कलिंग के नाम से जाना जाता था, असंख्य मंदिरों का स्थल है।

जिस प्रकार उन मंदिरों की कलात्मकता अद्‍भुत है, उसी प्रकार ओड़िसावासी, देवताओं की पूजा भी आनोखे तरीके से करते हैं। जिसका एक उदाहरण है लक्ष्मी देवी की पूजा। एक बाँस की डोलची में ऊपर तक सफेद चावल भरकर उसे देवी का प्रतीक माना जाता है। पूरे मर्गशिरा मास में प्रत्येक गुरुवा र को घर को स्वच्छ कर, घर के सामने सुन्दर कलात्मक रंगोली बनाकर इस प्रतीक की पूजा बड़ी श्रद्धा से की जाती है। इसे *मानबसा* के नाम से जाना जाता है। *

यहाँ पर इससे सम्बन्धित एक और परम्परा है, जो प्रसिद्ध जगनाथ मंदिर के बारे में है। श्री जगनाथ विष्णु के रूप हैं और लक्ष्मी उनकी पत्नी। मर्गशिरा मास के गुरूवार की एक प्रात: देवी यह जानने के लिए बाहर आईं कि भक्त उनकी पूजा किस प्रकार करते हैं। देवी चन्दल कुल की एक गरीब स्त्री श्रिया की पूजा से बहुत प्रसन्न हुईं। ज्यों ही श्रिया पूजा समाप्त कर अपने घर के सामने खड़ी हुई तभी जगनाथ और उनके बड़े भाई बलभद्र वहाँ से गुजर रहे थे। बलभद्र ने लक्ष्मी को उस नीचकुल की स्त्री के साथ खड़े हुए देख लिया और नाराज होकर जगनाथ को लक्ष्मी को त्याग देने का आदेश दिया।

जब लक्ष्मीजी मंदिर को छोड़, सारा धन आदि लेकर वहाँ से चली गयीं, तो स्थिति ऐसी होगई कि जगनाथ एवं बलभद्र भूखों मरने लगे और भोजन मे लिए भिक्षा मांगने लगे। लेकिन लक्ष्मी को घर से निकालने वालों को पापी समझकर कोई उन्हें भीख भी नहीं देता था। विवश हो दोनो भाई चन्दल के घर पर भिक्षा मांगने गए। जहाँ लक्ष्मी जी पहले से ही रह रही थीं। अपना परिचय बताए बिना ही देवी ने उन लोगों के लिए स्वयं भोजन पकाया। *पोड पिथा* (एक प्रकार का हलवा) खाते समय दोनो भाइयों को पता चल गया कि यह लक्ष्मी ने बनाया है। उन्होने लक्ष्मी से क्षमा माँगी और विनती की कि वे घर वापस चलें। लक्ष्मी जी एक शर्त पर वापस जाने के लिए तैयार हुई कि पुरी के मंदिर में देवता को चढने वाला महाप्रसाद बिना भेद-भाव के सभी को समान रूप से दिया जाना चाहिए। तभी से यह परम्परा चली आ रही है। पुरी मंदिर में मर्गशिरा मास में इस घटना को अलग-अलग मान्यताओं के रूप में भी मानाया जाता है।

* *जैसाकि दिवाली लक्ष्मी पूजा के लिए प्रसिद्ध है। परन्तु ओड़िसा में लक्ष्मी-पूजा दिसम्बर और जनवरी महीने में की जाती है।*

अविश्वसनीय एक महान कार्य

बहुत पहले की बात है। जापान में एक ज़मींदार रहा करता था। उसके दादा परदादाओं ने अपार संपत्ति कमायी थी। वह सदा उनकी प्रशंसा के पुल बांधता रहता था और कहता रहता था कि वे लोग बहुत बड़े लोग थे। उनके लिए कोई भी काम असंभव या असाध्य नहीं था। परंतु स्वयं उसने कुछ नहीं कमाया। उसे पुरखों की प्रशंसा के गीत गाते रहने में ही आनंद प्राप्त होता था।

कुछ लोगों ने उसकी इस प्रवृत्ति से लाभ उठाना चाहा। वे हर दिन अपना उल्लू सीधा करने के लिए उसके पास जमा हो जाते और उसके पुरखों की वाहवाही करते रहते थे। एक ने कहा "आपके पिता ने महाराज को ही हरा दिया। महाराज आपके पिता के सामने टिक न पाये और दुम दबाकर भाग गये।" दूसरा कहने लगा "आपके दादा ने हमारे राज्य के सुप्रसिद्ध पंडित को अपने पांडित्य से पछाड़ डाला।" तीसरे ने कहा "आपके परदादा की सुँदरता का क्या कहना! उनकी सुँदरता पर अप्सराएँ भी रीझ गयीं और उनसे विवाह रचाने सन्नद्ध हो गयीं। आपके मुखमंडल पर भी आपके पुरखों की परछाइयाँ हैं। आपसे शादी करने के लिए कल-परसों कोई अप्सरा भी आ धमके तो इसमें आश्चर्य करने की कोई बात नहीं।"

"हाँ, हाँ, तुम लोगों ने ठीक कहा। यह तो सारी दुनिया जानती है कि हमारे पुरखे सर्वज्ञ थे। कोई ऐसा काम नहीं, जिसे उन्होंने पूरा न किया हो। वे सर्वशक्तिमान थे।" ज़मींदार को ऐसा कहते हुए असीम आनंद होता था।

यों समय गुज़रता गया। एक दिन अपने चारों ओर बैठे लोगों से ज़मींदार ने कहा "आपमें से क्या कोई बता सकता है कि वह कौन-सा बड़ा काम था, जिसे मेरे दादा परदादा ने कर दिखाया? जो बता पायेगा, उसे सोने की सौ अशर्फ़ियाँ दूँगा।"

चारों ओर बैठे लोगों में से कोई भी किसी नयी घटना की कल्पना नहीं कर सका, इसलिए वे चुप रह गये।

उस समय एक ग़रीब किसान वहाँ आया। उसके खेत में जो फ़सल हुई थी, उस पर ज़मींदार के

जापान की एक लोक कथा

गुमाश्ता ने एक चाँदी की अशर्फ़ी का कर लगाया था । किसान ने ज़मींदार से निवेदन किया कि यह सरासर अन्याय है ।

"आख़िर एक चांदी की अशर्फ़ी के लिए इतना होहल्ला मचा रहे हो? हमारे पुरखों के द्वारा किये किसी बड़े-बड़े कामों में से एक बड़ा काम ही सही, बातओगे तो सौ अशर्फ़ियाँ जीत सकोगे ।" ज़मींदार ने उसकी शिकायत को नजरअंदाज करते हुए उसे चुनौती दी ।

"आपके दादा परदादा का किया हुआ एक महान कार्य बता सकता हूँ । ऐसा महान कार्य किसी और ज़मींदार ने या राजा ने किया नहीं होगा । उनके दादा परदादाओं से भी यह संभव हुआ नहीं होगा" किसान ने कहा ।

गरीब के इस जवाब से ज़मींदार चकित रह गया । अपने को संभालते हुए ज़मींदार ने कहा "तुम्हारे कहने मात्र से मैं स्वीकार नहीं करूँगा कि उन्होंने कौन-सा महान कार्य किया? मुझे भी लगना चाहिए कि उनके जिस महान कार्य का जिक्र तुमने किया, वह सही है या वह सचमुच महान कार्य भी है । क्या तुम्हें मेरी शर्त मंजूर है?"

"ठीक है । निर्णय आपके हाथ में है" ग़रीब किसान ने कहा ।

"अब बताओ" ज़मींदार ने कहा ।

किसान ने अब बताना शुरू कर दिया । आपके दादा के परदादा माने आपकी पाँचवीं पीढ़ी के ज़मींदार बहुत ही महान व्यक्ति थे । वे एक दिन परिवार सहित दूर के एक मंदिर में भगवान का दर्शन करने पालकी में बैठकर निकले ।

"दुपहर होते-होते वे एक बरगद के वृक्ष के पास पहुँचे । वहाँ विश्राम करना चाहा । पालकी से वे उतरे । उस समय उस रास्ते से गुज़रते हुए एक मुसाफ़िर ने उनसे कहा "प्रभु, इस वृक्ष पर रंग बिरंगे कितने ही पक्षी निवास करते हैं । हो सकता है, वे आपके ऊपर विष्ठा कर दें और आपके कपड़ों को खराब कर दें। अच्छाई इसी में है कि आप इस जगह को छोड़ दें, कहीं और आराम करें ।

ज़मींदार उसकी इन बातों से चिढ़ते हुए बोले

''मैं ज़मींदार हूँ । क्या पक्षियों से डरकर यहाँ से निकल जाऊँ? असंभव । मेरा यहाँ से जाने का सवाल ही नहीं उठता ।''

''मेरे परदादा ने जो कहा, वह सही एवं सहज था । क्योंकि वे स्वतंत्र प्रवृत्ति के थे । किसी की बात सुनने और मानने के लिए कभी भी तैयार नहीं होते थे ।'' ज़मींदार ने कहा ।

किसान ने फिर से कहना शुरू किया ''थोड़ी देर बाद किसी पक्षी ने उनपर विष्ठा कर दिया । उन्होंने तुरंत वह कुरता बदल दिया और हुक्म दिया कि नया कुरता लाया जाए । उनके नौकर नया कुरता ले आये और उन्हें पहनाया ।''

थोड़ी देर बाद एक और पक्षी ने उनके दुशाले को खराब कर दिया। ज़मींदार ने आदेश दिया कि इस दुशाले को फेंक दो और नया दुशाला ले आओ ।'' ज़मींदार के नौकरों ने इनकी आज्ञा का पालन किया ।

''इसमें भला कौन-सी बड़ी बात है! मेरे परदादा जहाँ कहीं भी जाते थे, कपड़ों से लबालब भरी पेटी ले जाया करते थे ।'' ज़मींदार ने गर्व भरे स्वर में कहा ।

किसान ने फिर से कहना शुरू किया ''थोड़ी देर बाद एक और पक्षी ने उनके ऊपर विष्ठा कर दिया। इस बार वह उनके चप्पलों पर जा गिरा । उन्होंने उन चप्पलों को दूर फेंक दिया और नौकरों की तरफ़ गुर्राते हुए देखा । वे तुरंत नये चप्पल ले आये ।''

''हाँ, हाँ, उनके स्वभाव से मैं भली-भांति परिचित हूँ । आख़िर वे हमारे पुरखे जो ठहरे'' तैश में आकर ज़मींदार ने कहा ।

किसान ने फिर से कहा ''थोड़ी देर बाद किसी एक और पक्षी ने ठीक उनके सिर पर पेशाब किया। आपके परदादा ने बिना सोचे-विचारे आज्ञा दी कि यह सर निकाल दिया जाए और इसकी जगह पर नया सर रखा जाए ।''

ज़मींदार ने कहा ''इस घटना पर मुझे विश्वास नहीं हो रहा है ।''

''धन्यवाद प्रभु मैंने इनाम जीत लिया'' कहता हुआ किसान छलांग मारता हुआ आगे बढ़ा और अशर्फ़ियों की थैली उठा ली। वहाँ उपस्थित सभी लोग हंस पड़े और सबने तालियाँ बजायीं । ज़मींदार किसान के ख़िलाफ़ कुछ कह न पाया ।

किसान ने ज़मींदार को सविनय नमस्कार किया और थैली लेकर वहाँ से चलता बना ।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?
तुम एक सामान्य पोस्टकार्ड पर इसे लिख कर इस पते पर भेज सकते हो :
चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा, वड़पलनि, चेन्नै - 600 026

जो हमारे पास इस माह की 25 तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर 100/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

अगस्त अंक के पुरस्कार विजेता हैं :
अमित कुमार सिंह
क्वा. नं. 77/2, "आर" लैन्स
एस.एफ. क्वार्टर्स, कालिपलटन,
कामपटी - 441 001 (महाराष्ट्र).

विजयी प्रविष्टि :
पहला चित्र : "दीदी पानी भर दो आप दूसरा चित्र : बर्तन कर लूँगा मैं साफ।"